सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अप्रैल, 2016 | वर्ष 15 | अंक 02

तौबा और दुआ

हैं गुनह मेरे तो या रब बे शुमार।
बख़्शना ताइब को तेरा है शिआ़र।
तौबा, तौबा, तौबा, तौबा, या खुदा।
हूँ मैं नादिम मुझसे जो कुछ हो गया।
हूँ मैं बन्दा तेरा आ़सी या खुदा।
बख़्श दे मेरे गुनह सब या खुदा।
ले बचा या रब मुझे शैतान से।
और बचा मुझको बुरे इंसान से।
राह पर या रब नबी की मैं चलूँ।
और सहाबा से मैं तेरा दीन लूँ।
पढ़ता हूँ या रब नबी पर मैं सलाम।
रहमतें उतरें तेरी उन पर मुदाम।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
एक दुआ	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	07
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	11
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी	16
हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिए	मौलाना जाफर मसऊद नदवी	18
तबलीग़ की अहमियत	मौलाना सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	25
हमारी निम्नता का वास्तविक	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	27
इस्लाम की नज़र में ज्ञान	ई0 जावेद इक़बाल	30
पाश्चात्य देशों में इस्लाम	मौलाना जावेद अख़्तर नदवी	33
एक मुस्लिम युवक की बहादुरी	इदारा	35
अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद	मौ0 नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	37
ईमान की अलामत	हाशमा अंसारी	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद- क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब में से एक भाग दिया गया, उनको अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जाता है ताकि वह उनके बीच फैसला कर दे फिर उनमें एक गिरोह बेरुख़ी के साथ मुंह मोड़ लेता है(23) इस लिए कि वे कहते हैं आग तो हमें गिने—चुने दिनों के लिए छुएगी और जो कुछ वे गढ़ते हैं उसने उनको उनके दीन (धर्म) के बारे में धोखे में डाल रखा है[1](24) तो भला उस समय उनका क्या हाल होगा जब हम उनको उस दिन के लिए एकत्र करेंगे जिसमें कोई शक नहीं और हर व्यक्ति को उसकी कमाई पूरी की पूरी दे दी जाएगी और उनके साथ ज़रा अन्याय न किया जाएगा(25) आप कहिए ऐ अल्लाह ऐ बादशाही के मालिक! जिसको चाहे तू बादशाही दे और जिससे चाहे बादशाही छीन ले, जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसको चाहे ज़लील (अपमानित) करे, भलाई तेरे ही हाथ में है और बेशक तू हर चीज़ पर पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है(26) दिन पर रात को ले आए और रात पर दिन को लाए, ज़िन्दा को मुर्दे से निकाले और मुर्दे को ज़िन्दा से निकाले और जिसको तू चाहे बे—हिसाब रोज़ी दे[2](27) ईमान वालों को छोड़ कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाएं और अगर कोई ऐसे करता है तो अल्लाह के यहां किसी गिनती में नहीं सिवाए इसके कि तुम उनसे बचाव के लिए उपाय के तौर पर कुछ कर लो और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से ख़बरदार करता है और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है[3](28) आप कह दीजिए कि तुम जो कुछ अपने सीनों में छिपाते हो या उसको ज़ाहिर करते हो अल्लाह उसको जानता है और जो कुछ भी आसमानों और ज़मीन में है वह सब कुछ जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत (सामर्थ्य) रखने वाला है[4](29)। जिस दिन हर व्यक्ति अपने हर भले कर्म को हाज़िर पाएगा और जो बुराई उसने की है (उसको भी सामने देख कर) वह कहेगा कि उसके और उसकी बुराई के बीच बड़ी लम्बी दूरी होती और अल्लाह तुम्हें अपने आप से ख़बरदार करता है और अल्लाह बन्दों पर बड़ा दयालु है(30) आप कह दीजिए अगर तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरी राह चलो, अल्लाह तुम से प्रेम करने लगेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और अल्लाह बहुत माफ करने वाला अतयन्त दयालु है[5](31) आप कह दीजिए कि अल्लाह और उसके रसूल की बात मानो फिर अगर वे मुंह फेर लें तो अल्लाह

इन्कार करने वालों को पसंद नहीं करता(32) बेशक अल्लाह ने आदम और नूह और इब्राहीम के घर वालों और आले इमरान[6] को सारे संसारों में चुन लिया है(33) यह एक दूसरे की संतान हैं और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला और खूब जानने वाला है(34) जब इमरान की पत्नी ने दुआ (प्रार्थना) की कि ऐ मेरे पालनहार! मेरे पेट में जो कुछ है मैंने उसको आज़ाद कर देने की मन्नत मानी है बस तू मेरी ओर से (यह मन्नत) स्वीकार कर ले बेशक तू ही ख़ूब सुनने वाला और खूब जानने वाला है[7](35) फिर जब उन्होंने उसको जना तो बोलीं कि ऐ मेरे पालनहार! मैंने तो लड़की जनी और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उन्होंने क्या जना और लड़का (उस) लड़की की तरह हो नहीं सकता और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको उसकी संतान को शैतान मरदूद से तेरे शरण में देती हूं(36) बस उनके रब ने उनको ख़ूब–ख़ूब कबूल किया और उनको अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़करिया को उनका संरक्षक (सरपरस्त) बनाया, जब भी ज़करिया हुजरे (कोठरी) में उनके पास आते तो उनके पास खाने पीने (की चीज़ें) मौजूद पाते (एक बार) उन्होंने कहा ऐ मरियम! तेरे पास यह चीज़ें कहां से आ जाती हैं, वे बोलीं कि यह अल्लाह के पास से (आ जाती) हैं बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बिना हिसाब रोज़ी पहुंचाता है(37)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यानी यहूदी और ईसाई कि जो किताबें खुद उनको मिलीं हैं उनके अनुसार भी फ़ैसला कराने पर सहमत नहीं और इससे आगे बढ़ कर यह कि यहूदी अपने को खुदा का प्रिय कहते थे और उनका ख़याल था कि उनको अज़ाब (सज़ा) होगा ही नहीं और होगा भी तो केवल सात दिनों के लिए, और ईसाईयों के यहां कफ़्फ़ारह (प्रायश्चित्त) के अक़ीदे ने उनके सारे पाप माफ़ कर दिए थे, आगे बात साफ़ कर दी गई कि सबको अपने अपने कामों का हिसाब देना होगा और उसके अनुसार सज़ा पानी होगी।

2. इनमें एक हल्का संकेत यह भी है कि सरदारी जो यहूदियों में थी अब इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की संतान की ओर जा रही है और यह किसी की जागीर नहीं अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे प्रदान करे।

3. जब सब शक्ति अल्लाह ही के हाथ में है तो अल्लाह के बाग़ियों और उसका इन्कार करने वालों को दोस्त बनाना कब ठीक हुआ, हां तुम अपने बचाव के लिए जो आव–भगत करो वह वैध है, इसी प्रकार उनको अल्लाह का बनाने के लिए जो प्रेम व भाईचारा किया जाए वह बेहतर है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल्म की सुन्नत पूरे जीवन में यह रही है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे लोगों के साथ एहसान का मामला किया।

शेष पृष्ठ .....10...पर...

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

दिन में हज़ार नेकियां:-

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 से रिवायत है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर थे आपने फरमाया कि क्या कोई दिन में एक हज़ार नेकी कमाने में असफल है, एक आदमी ने कहा, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भला दिन भर में एक हज़ार नेकी कौन कर सकता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "सुब्हानल्लाहि" सौ बार पढ़ लेने से एक हज़ार नेकियाँ हासिल हो जायेंगी या एक हज़ार गुनाह उससे मिटा दिये जायेंगे।

(मुस्लिम शरीफ)

बदन का सदका:-

हज़रत अबू ज़र रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर सुब्ह को तुम्हारे (बदन के) हर जोड़ पर तुम्हारे लिए सद्क़ा अनिवार्य है "सुब्हानल्लाहि" पढ़ना सद्क़ा है, और अलहमदुलिल्लाहि पढ़ना सद्क़ा है, ला इलाहा इल्लल्लाहु पढ़ना सद्क़ा है, और अल्लाहु अकबर कहना सदक़ा है, और नेकी का हुक्म देना सदक़ा है, बुराई से रोकना सदक़ा है और इन सबके बदले में चाश्त (नमाज़) की सिर्फ दो रकअ़तें काफी हैं। (मुस्लिम शरीफ)

चार वजनी कलिमे:-

हज़रत उम्मुल मोमिनीन जुवैरिया रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुब्ह की नमाज़ के लिए मस्जिद में तशरीफ ले गये और चाश्त के बाद तशरीफ लाये, तो मुझे उसी प्रकार और उसी जगह बैठे हुए पाया जहां छोड़ गये थे, फरमाया तुम बराबर उसी प्रकार बैठी हो जैसे मैं छोड़ गया था उन्होंने कहा हाँ। आपने फरमाया मैंने उतनी देर में चार कलिमात तीन तीन बार कहे है। अगर वह तुम्हारे इस वक़्त के ज़िक्र से तौले जायें तो उनका वज़न जियादा हो, वह चार कलिमे यह है। "सुब्हानल्लाहि व बिहमदिहि अदद खलक़िहि" सुब्हानल्लाहि रिज़ा नफसिहि, सुब्हानल्लाहि ज़िनत अर्शिहि व मिदाद कलिमातिहि।

(मुस्लिम शरीफ)

अल्लाह का जिक्र न करने वाला मुर्दा है:-

हजरत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अल्लाह का जिक्र करने वालों और न करने वालों की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की तरह है। (बुखारी) और मुस्लिम शरीफ की एक रिवायत में है कि जिस घर में अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है और जिस घर में अल्लाह का जिक्र नहीं होता उसकी मिसाल ज़िंदा और मुर्दे की सी है।

तनहाई और जनसमूह का जिक्र:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं अपने बंदे के गुमान के साथ हूं जैसा वह मुझसे गुमान रखे और जब बंदा मुझ को याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूं अगर वह मुझ को अपने दिल में याद करता है तो मैं उसको अपने दिल में याद करता हूं और अगर वह मजमे में याद करता है तो मैं उसको ऐसे मजमे में याद करता हूं जो उससे बेहतर है (यानी फ़रिश्तों के मजमें में)। (बुखारी व मुस्लिम शरीफ)

आगे बढ जाने वाले:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मुफ्रिद लोग बढ़ गये, लोगों ने अर्ज किया मुफ्रिद कौन लोग है? आपने फरमाया अल्लाह को बहुत याद करने वाले मर्द और औरतें। (मुस्लिम शरीफ)

सबसे अफजल जिक्र:-

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सबसे अफजल जिक्र "लाइलाह इल्लल्लाह" है। (तिर्मिजी)

जिक्र से तर जबान:-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुसर रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लाम के अहकाम (यानी नवाफिल वगैरह) तो बहुत हैं आप कोई ऐसी बात इरशाद फरमाइये जिस पर मैं हमेशा पाबंदी करता रहूं, आपने फरमाया तुम्हारी जबान हमेशा अल्लाह के जिक्र से तर रहे (अर्थात हमेशा अल्लाह का नाम लेते रहो) तिर्मिजी)

जन्नत के पेड:-

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने "सुब्हानल्लाहि व बिहमदिहि" कह दिया उसके लिए जन्नत में एक खजूर का पेड़ लगा दिया जाता है। (तिर्मिजी)

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं मेअ़राज की रात हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मिला, उन्होंने मुझ से कहा ऐ मुहम्मद अपनी उम्मत को मेरा सलाम कहना और कहना कि जन्नत की मिट्टी पाकीज़ा है और पानी मीठा है और वह एक मैदान है दरखतों से खाली और "सुब्हानल्लाहि वल हमदुलिल्लाहि व लाइलाह इल्लल्लाहु व अल्लाहु अकबर कहना उसमें पेड़ लगाना है (यानी हर कलिमा के पढ़ने से एक पेड़ लगता है जितना जियादा पढ़ेगा उतने ही पेड़ लगेगें। (तिर्मिजी)

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

यकीं मुहकम अ़मल पैहम
महब्बत फ़तिहे आ़लम
जिहादे ज़िन्दगानी में
यह हैं मर्दों की शमशीरें

एक दुआ (विनय)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

ऐ अल्लाह हम तुझी से मदद मांगते हैं और तुझी से मग़फिरत तलब करते हैं और तुझ पर ईमान रखते हैं, और तुझ ही पर भरोसा करते हैं और तेरी अच्छी तारीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र करते हैं और तेरी नाशुक्री नहीं करते और अलग हो जाते हैं उस व्यक्ति से और छोड़ देते हैं उसको जो तेरी नाफरमानी करे। ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तेरे लिए नमाज़ पढ़ते हैं और तुझी को सज्दा करते हैं और तरी तरफ दौड़ते और झपटते हैं, और तुझी से रहमत की उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं निःसंदेह तेरा अज़ाब इन्कार करने वालों (कुफ़्र करने वालों) को पहुंचेगा।

यह एक दुआ का अनुवाद है जिसे हम प्रति रात वित्र की नमाज़ में पढ़ते हैं इस दुआ का नाम दुआए कुनूत है। वित्र में पढ़ने वाली कई दुआएं हदीस में आई हैं परन्तु अधिकांश लोग यही दुआ पढ़ते हैं। आइये इस दुआ पर कुछ चिन्तन मनन करें:—

हे अल्लाह (ईश्वर) हम तुझी से सहयोग मांगते हैं किसी और से नहीं। यहां "मैं" शब्द नहीं आया "हम" शब्द आया है जो बहु वचन है, इसमें संकेत है इस ओर कि हम समस्त मुसलमान यही दुआ करते हैं, तुझ ही से सहयोग (मदद) मांगते हैं तेरे अतिरिक्त से नहीं, इसका मतलब भली भांति समझना चाहिए, हम इस भौतिक संसार में एक दूसरे की मदद करते हैं और यह स्वयं अल्लाह का आदेश है" भले और अल्लाह से डरने वाले कामों में एक दूसरे की मदद किया करो तथा पाप के कामों और अल्लाह के अवज्ञा वाले कामों में एक दूसरे की मदद न किया करो" (माइदाः 3) ज़रा ध्यान दें जिस समय हम कहते हैं ऐ अल्लाह हमारी मदद कर तो हमारे मन में यह होता है कि अल्लाह हमारी परोक्ष से बिना सबब (कारण) के मदद करेगा, इससे स्पष्ट हो गया कि जो मदद माद्दी सबब (कारण) द्वारा होती है वह अल्लाह पर भरोसा रखते हुए अल्लाह के अतिरिक्त किसी से ली, तथा मांगी जा सकती है जैसे किसी से खाना, पानी, पैसा आदि मांगना, परन्तु बिना सबब के गैबी (परोक्ष सम्बन्धित) मदद की दुआ केवल अल्लाह से मांगी जाएगी, अल्लाह के अतिरिक्त किसी से नही, इस मस्अले में लोगों ने बहुत कुछ लिखा है हम इतने ही पर अपनी बात समाप्त करते हैं।

हम कहते हैं:— हे अल्लाह हम तुझ ही से मगफ़िरत तलब करते हैं अर्थात अपने पापों की ऐसी क्षमा चाहते हैं जिससे तू प्रसन्न हो कर जन्नत में प्रवेश दे दे और जहन्नम से बचा ले पापों को क्षमा करने वाला अल्लाह के अतिरिक्त

कोई नहीं, हां इस भौतिक संसार में त्रुटियों को क्षमा करने का लोगों को भी अधिकार है। हम किसी को कष्ट दें, किसी का हक़ मार लें तो हमारे लिए आवश्यक है कि हम उससे क्षमा चाहें और उसको क्षमा का अधिकार है परन्तु पापों की क्षमा तथा मग़फ़िरत प्राप्ति वाली क्षमा केवल अल्लाह से मांगी जाएगी।

हे अल्लाह (ईश्वर) हम तुझ पर ईमान रखते हैं अर्थात तू अपने नामों और गुणों के साथ जैसा है वैसा ही तुझे मानते हैं तथा तेरे आदेशों का पालन करते हैं। हम यह मानते हैं कि तू पवित्र है, विकार रहित है, तुझ जैसा कोई नहीं तेरी उपमा नहीं दी जा सकती है, तेरे गुण जो पवित्र कुर्आन में आए हैं अथवा तेरे नबी (सलल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बताए हैं हम उन सब को मानते हैं। हे अल्लाह हम तुझ ही पर भरोसा करते हैं, इस भौतिक संसार में भौतिक वस्तुओं पर भी भरोसा किया जाता है, मनुष्य अपनी शक्ति पर भरोसा करता है, अपनी सन्तान पर भरोसा करता है, राष्ट्र अपनी सेना पर भरोसा करता है परन्तु यह सारे भरोसे क्षण भंगुर हैं, अस्थाई हैं, अल्लाह न चाहे तो इनमें से कोई भी काम न आए, स्थाई भरोसा तो अल्लाह ही का है अतः हम कहते हैं ऐ अल्लाह हम तुझी पर भरोसा करते हैं।

हे अल्लाह (ईश्वर) हम तेरी अच्छी तारीफ़ करते हैं और कहते हैं "समस्त प्रशंसाएं अल्लाह ही के लिए हैं, वह समस्त संसार का पालनहार है वह बड़ा दयालु, महा कृपालू है, वह हिसाब किताब के दिन अर्थात बदला दिये जाने के दिन का स्वामी है, इसी प्रकार ऐ अल्लाह पवित्र कुर्आन में तूने स्वयं अपने प्रशंसा के जो वाक्य सिखाए हैं या तेरे बनी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरी प्रशंसा में जो वाक्य कहे हैं हम अपनी शक्ति तक उनको जपते हैं।

हे अल्लाह हम तेरी अनगिनत नेमतों पर तेरा शुक्र करते हैं, कृतज्ञता प्रकट करते हैं, कृतज्ञ हैं, जुबां से भी तेरा शुक्र अदा करते हैं और कहते हैं ऐ अल्लाह तेरा बड़ा करम है बड़ा उपकार है कि तू ने अनगिनत नेमतों के साथ सत्य मार्ग दर्शाया, ईमान का पुरस्कार प्रदान किया, अपनी क्रियाओं से भी तेरी अवज्ञा से दूर रह कर तेरा शुक्र अदा करते हैं, और ऐ अल्लाह हम तेरी ना शुक्री (कृतघ्नता) नहीं करते हम कृतघ्न नहीं हैं कृतज्ञ हैं, तेरी नाशुक्री से हम तेरी शरण मांगते हैं, ऐ अल्लाह हमारी जुबान से कभी ना शुक्री के शब्द न निकलें न हमारे कर्मों से ना शुक्री ज़ाहिर हो।

हम कहते हैं– ऐ अल्लाह हम अपने से अलग कर देते हैं और छोड़ देते हैं ऐसे व्यक्ति को जो तेरी अवज्ञा करता है। ऐ अल्लाह हमारी समझ में अवज्ञा करने वाले कई प्रकार के होते हैं।

एक वह हैं जो तुझे सिरे से नकारते हैं और तेरे आदेशों को नहीं मानते और खुल्लम खुल्ला तेरे अस्तित्व का इंकार करते हैं ऐसे लोग रूस और चीन में हैं। हमारे

देश में भी ऐसे लोग पाए जाते हैं हमारा उनसे कोई संबंध नहीं ऐ अल्लाह उनके कुप्रभाव से हमको सुरक्षित रख।

एक वह हैं जो तुझे मानते तो हैं परन्तु तेरा साझी ठहरा कर बड़ी अवज्ञा करते हैं साथ ही तेरे ईमान वाले बन्दों को सताते हैं उनका विरोध करते हैं हमारे देश में ऐसे लोग भी पाये जाते हैं, आदित्यनाथ तथा तोगड़िया जैसे लोग उन्हीं में से हैं हम उनसे दूर रहते हैं उनको अपने से दूर रखते हैं, उनके कुप्रभाव से बचने का उचित प्रयास करते हैं और तुझसे दुआ करते हैं कि हमको उनके कुप्रभाव से सुरक्षित रख।

एक वह हैं जो तुझे तो मानते हैं परन्तु तेरा साझी ठहरा कर तेरी बड़ी अवज्ञा करते हैं इस्लाम स्वीकर नहीं करते परन्तु इस्लाम और मुसलमानों का विरोध नहीं करते अपितु मुसलमानों के साथ सहानुभूति करते हैं, अच्छा व्यवहार करते हैं, हमारे देश में ऐसे ही लोग बहुसंख्यक में हैं, शासन भी उन्हीं के हाथ में है ऐ अल्लाह हम उनको छोड़ न पायेंगे वह हमारा सहयोग करते हैं हम उनका सहयोग करते हैं वह हमारे अच्छे पड़ोसी हैं हम उनके अच्छे पड़ोसी हैं एक समाज में मिलजुल कर रहते हैं, ऐ अल्लाह आपने स्वयं पवित्र कुरआन में कहा है "जिन लोगों ने दीन के कारण तुमसे युद्ध नहीं किया न तुमको तुम्हारे घरों से निकाला उनसे भला बरताव करो न्याय का स्वभाव करो तो अल्लाह तुमको इससे नहीं रोकता।" (मुमतहिनाः 8)

कुछ वह अवज्ञा करने वाले हैं जो अपने को मुसलमान कहते हैं परन्तु पवित्र कुरआन में वर्णित जिन, शैतान, फिरिश्ता, जन्नत जहन्नम, क़ियामत का आना आदि को वैसे नहीं मानते जैसे अल्लाह के नबी सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम ने बताया है, अथवा अल्लाह के नबियों द्वारा जाहिर होने वाले मोअ़जिज़ात और अल्लाह के वलियों से ज़ाहिर होने वाली करामात को नहीं मानते या हदीसों का इन्कार करते हैं और अपने को तथाकथित अहले कुरआन कहते हैं कुछ ऐसे भी हैं जो ख़त्म नुबूवत के अक़ीदे को नहीं मानते जैसे क़ादियानी ऐ अल्लाह हम इन सबसे अलग हैं इनको छोड़ते हैं इनसे हमारा कोई संबंध नहीं यह हमारे दीन के लिए खतरनाक हैं, ऐ अल्लाह इनके कुप्रभाव से तेरी शरण चाहते हैं, कुछ ऐसे लोग भी तेरी अवज्ञा करते हैं जो तुझ पर ईमान रखते हैं, तेरे ओदेशों को मानते हैं उनका आदर सम्मान करते हैं परन्तु शैतान तथा तामस मन के बहकावे में आ कर तेरे आदेशों के पालन में कोताही करते हैं कभी नमाज़ें छोड़ते हैं कभी नमाज़ की ज़माअत छोड़ देते हैं कभी रोज़े छोड़ देते हैं कभी नाच बाजा में लग जाते हैं आदि, ऐ अल्लाह हम अपनी कमज़ोरी से इनको नहीं छोड पाते परन्तु हम अपने सद्व्यवहार से भले कर्मों से सत्य वचनों

से उनकी कोताही दूर करने का प्रयास करते रहते हैं ऐ अल्लाह हमसे भी तो कोताही हो जाती है, हम तौबा करते हैं ऐ अल्लाह हम उन भाइयों को भी तौबा करने पर प्रेरित करते हैं, ऐ अल्लाह इस विषय में हमसे जो कोताही हो रही हो अपनी कुदरत से उसको दूर कर दे और हमको क्षमा कर दे।

ऐ अल्लाह हम तेरी ही उपासना करते हैं और मानते हैं कि तेरे अतिरिक्त कोई और उपास्य नहीं, ऐ अल्लाह हम तेरे ही लिए नमाज़ें पढ़ते हैं और तुझ ही को सजदा करते हैं तेरे अतिरिक्त को सजदा (नमन) करने को अवैध तथा महा पाप जानते हैं। ऐ अल्लाह हम तेरी ओर दौड़ते और झपटते हैं अर्थात तुझ को प्रसन्न करने वाले कामों को अपनाने में भरपूर प्रयास करते हैं, ऐ अल्लाह हम तेरी कृपा तथा दया की पूरी आशा रखते हैं ऐ अल्लाह तूने खुद कहा है कि मेरी रहमत (दया) समस्त चीज़ों को घेरे हुए है। (आराफः 156)। ऐ अल्लाह हम तेरे प्रकोप से डरते हैं निसंदेह तेरा प्रकोप तेरे इंकार करने वालों को पहुंचने वाला है।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

4. दोस्ती यारी और आव–भगत घनिष्ट संबंध तक न पहुंच जाए कि शिर्क की घृणा कम होने लगे और काफ़िरों के साथ उठते बैठते कुफ़्र व शिर्क के कामों में सहभागिता होने लगे तो अल्लाह सब जानता है और पूरी कुदरत (सामर्थ्य) रखता है।

5. अल्लाह के दुश्मनों से प्रेम व मुहब्बत से मना करने के बाद अल्लाह से प्रेम का मानक और उसकी कसौटी बताई जा रही है कि जो व्यक्ति जितना अल्लाह के रसूल (संदेष्टा) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुयायी होगा वह उतना ही प्रेम के दावे में खरा होगा और उसका बड़ा फायदा यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उसको अपना प्रिय बना लेंगे और उसको माफ़ कर देंगे।

6. इमरान हज़रत मरियम के पिता का नाम था।

7. पहले संप्रदायों में यह चलन था कि लड़कों को अल्लाह के लिए देने की मन्नत मानते थे फिर जब लड़का होता तो उससे दुनिया का कोई काम न लेते और वह हर समय इबादत (उपासना) करता, हज़रत मरियम की माँ ने ऐसी ही मन्नत मानी थी, जब लड़की हुई तो उनको अफसोस हुआ, इस पर अल्लाह ने कहा "लड़का भी इस लड़की जैसा नहीं हो सकता" वे लेकर मस्जिद गईं, हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम की पत्नी उनकी मौसी (ख़ाला) थीं उन्होंने उनका ज़िम्मा लिया, जब वे उनकी कोठरी में जाते तो देखते कि बे मौसम के फल मौजूद हैं, बस उस समय उन्होंने दुआ (प्रार्थना) की कि जब अल्लाह मरियम को बे मौसम मेवा दे सकता है तो बुढ़ापे में मुझे संतान क्यों नहीं दे सकता।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

दूसरे कुछ अहम सहाब-ए-किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम

हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत ज़ैद बिन हारिस हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किये हुए गुलाम और मशहूर सहाबी गुज़रे हैं। वह गुलाम की हैसियत से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहलिया (पत्नी) उम्मुलमोमिनीन हज़रत खदीजतुल कुबरा रज़ि0 के पास थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह का संबंध हो जाने के बाद उन्होंने आपको दे दिया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको आज़ाद करके बेटे की तरह क़रार दिया। उनके बाप अर्से से उनकी तलाश में थे उन्होंने चाहा कि उनका बेटा उनको मिल जाए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तैयार हो गए मगर हज़रत ज़ैद बाप के साथ जाने पर तैयार न हुए और आपके साथ रहने को तरजीह (प्रमुख्ता) दी। आप भी उनसे बेटे की तरह पेश आते। इसकी वजह से उनको ज़ैद बिन मुहम्मद कहा जाने लगा था। "वही" के ज़रिये हुक्म मिला कि किसी को बेटा बना लेने से बेटा नहीं बनता। लिहाज़ा वह ज़ैद बिन हारिस कहे जाने लगे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका बड़ा ख़्याल रखा और बाद में अपनी फूफी की लड़की से उनकी शादी कर दी, जो निभ न सकी और दोनों में अलाहिदगी हो गई। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी फूफी की बेटी की दिलदारी के लिए अपने निकाह में ले लिया लेकिन हज़रत ज़ैद के साथ अच्छा बर्ताव ही करते रहे। उनके बेटे उसामा थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके साथ औलाद की तरह महब्बत व शफ़कत का मामला करते थे और उनको एक ग़ज़वे में बड़े बड़े सहाबा के बावजूद फ़ौज का सरबराह बनाया।

हज़रत अरक़म बिन अबिल अरकम रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत अरकम बिन अबिल अरकम कुरैश के मशहूर क़बीले बनी मख़जूम के व्यक्ति थे। उस शाख़ में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सख़्त विरोधी थे लेकिन हज़रत अरक़म इस्लाम ले आए फिर अपने घर को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपने सहाबा के मिलने और दीनी रहनुमाई के लिए एक गुप्त स्थान की हैसियत से सुपुर्द कर दिया था। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा से मिलते और वार्तालाप करते। हज़रत उमर भी वहीं जा कर इस्लाम लाए। हज़रत अरक़म बिन अबिल अरकम ने इस तरह इस्लाम को ताकत पहुंचाने

और मदद करने का सबूत दिया और उनके घर का नाम "दारे अरक़म" के नाम से आज भी जाना जाता है।

हज़रत अमर बिन आस रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत अमर बिन आस बड़ी सूझ बूझ, कूट नीति में प्रमुख समझे जाते थे। कुरैश की तरफ से इस्लाम की मुख़ालिफत (विरोध) में लगे रहे और जब मुसलमान हब्शा हिजरत करने लगे तो उनको पकड़ कर लाने के लिए भेजे गए थे, कि हब्शा के बादशाह से बात करके पकड़ कर लाएं। वह इस्लाम के विरोध में रहे। लेकिन "हुदैबिया संधि" के बाद उनको इस्लाम के बारे में इतमीनान हासिल हुआ और हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़ि0 के हाथ पर ईमान लाए और फिर अपनी योग्यताएं इस्लाम की सेवा में लगा दीं। और बड़ी लाभदायक सेवाएं अंजाम दीं। हज़रत उमर के ज़माने में मिस्र की फ़तह का कारनामा अंजाम दिया और मिस्र में सन् 50 हिजरी के आस पास वफ़ात पायी।

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु अन्हु-

साबिकीन अव्वलीन, सबसे पहले ईमान लाने वालों में हैं। मूलतः क़हतानी हैं। उन्हें भी मक्का के मुशरिकीन ने बड़ी तकलीफें दीं, जिससे उनकी पीठ पर काले दाग़ पड़ गए थे। जो आख़िर तक रहे। इसी तरह आपके बाप हज़रत यासिर और माँ हज़रत सुमय्या तो इस्लाम की पहली शहीद ख़ातून थीं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी तकलीफ़ों को देख कर फरमाया करते "ऐ अहले यासिर सब्र करो" और कभी फरमाते "तुमको बशारत हो जन्नत तुम्हारी मुश्ताक़ (लालायित) है।" हज़रत अम्मार को शहादत की बशारत हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुनाई थी। जंग सिफ़्फ़ीन में शहादत पायी।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद कुरैश के शहसवारों में थे और सैनिक नेतृत्व का काम भी उनके सुपुर्द किया जाता था और मुसलमानों की जो जंगें काफ़िरों से हुई उनमें वह मुसलमानों के विरुद्ध शरीक रहे। उन्होंने खास तौर पर ग़ज़व-ए-उहद में अपनी विरोधी कूट नीति से बहुत नुकसान पहुंचाया लेकिन "हुदैबिया संधि" के बाद हज़रत अमर बिन आस के साथ वह भी इस्लाम से संतुष्ट हो कर मदीना आ कर मुसलमान हो गए और फिर अपने सैन्य संचालन और सैनिक नेतृत्व को पूर्ण वीरता के साथ प्रयोग करते रहे। यहां तक कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी कारगुज़ारी से खुश हो कर "सैफुल्लाह" अल्लाह की तलवार का ख़िताब दिया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद भी युद्ध-अभियान में विशेष प्रमुखता प्राप्त रही और बड़ी कामयाबियाँ मिलीं। उनके नेतृत्व में शाम भी फतह हुआ। यह भी कबीले मख़ज़ूम के व्यक्ति थे, जिसके कई लोगों की इस्लाम से दुश्मनी मशहूर थी हज़रत उमर के ख़िलाफत काल में "हिम्स" (शाम) में सन् 21 हिजरी में वफात पायी।

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0

उन ऊँचे सहाबा में हैं जिनको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त गुज़ारने की सआदत (सौभाग्य) मिली। इसलिए सबसे ज़्यादा हदीसें भी इन्हीं से बयान की गई हैं। अल्लाह ने इनको याद करने और बयान करने की आला दर्जे की सलाहियत अता फरमाई थी। उनकी यह सलाहियत दीन व शरीअत की हिफ़ाज़त में बड़ी काम आयी। अच्छी उम्र पायी। ज़माने की बड़ी ऊँच नीच देखी और उम्मत की रहनुमाई का काम अंजाम दिया।

हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ि0 उन चार मशहूर सहाबा में से हैं जिनको कुर्आन मजीद का खुसूसी तौर पर इल्म अता हुआ था और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन हज़रात से कुरआ़न मजीद सीखने को फरमाया था। अन्सार के क़बील–ए–ख़ज़रज से हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फरमाया था कि अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें कुरआन मजीद सुनाऊँ। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको "सय्यदुल अन्सार" का ख़िताब दिया था। मदीने में सन् 18 हिजरी में वफात पायी।

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत अबू मूसा अशअ़री का नाम अब्दुल्लाह बिन क़ैस है। कबील–ए–अशअर के फर्द थे। मक्का में इस्लाम लाए और इस्लाम कुबूल करने पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पूरा साथ दिया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ऐतमाद (विश्वास) हासिल किया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद ख़िलाफते इस्लामिया की तरफ से दी गयी ज़िम्मेदारियों को भली भांति अंजाम दिया और वह प्रसिद्ध सहाबा में शुमार किये जाते हैं। हब्शा हिजरत की थी फिर वहां से मदीना हाज़िर हुए थे। मक्का मुअज़्ज़मा में सन् 52 हिजरी में वफात पायी।

हज़रत अबू सुफ़यान व मआविया बिन अबी सुफ़यान रज़िअल्लाहु अन्हुमा-

सख़र बिन हर्ब बिन उमय्या नाम है। कुरैश के उन सरदारों में थे जिनके ज़िम्मे जंगों में लीडरी सुपुर्द की जाती थी। चुनांचे मुसलमानों से कुरैश की जंगों में उन्होंने बड़ी लीडरी की। वह कुरैश की शाख़ बनी उमय्या में थे, जिसमें तीसरे ख़लीफ़–ए–राशिद हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान भी थे और बनी उमय्या की शाख़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा की चचाज़ाद शाख़ थी। इस तरीक़े से ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदारी भी थी लेकिन कुरैश के जंगी लीडर होने की वजह से वह मुसलमानों के विरुद्ध लीडरी करते रहे और फतह मक्का के मौक़े पर मुसलमानों के मक्का पहुंचने से पहले वह इस्लाम ले आए और फिर इस्लाम के वफादार रहे और निःस्वार्थ सहाबी की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ारी। उनके साहबज़ादे हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़यान थे।

हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़यान रज़िअल्लाहु अन्हुमा ख़िलाफते राशिदा के बाद ख़लीफा हुए और बनी उमय्या का दौरे, हुकूमत व ख़िलाफत उनसे शुरु हुआ। उन्होंने बड़ी कूट नीति और राजनैतिक समझ बूझ के साथ शासन किया और इस्लामी महिमा को बाकी रखने की कोशिश की। उनको हज़रत उमर ने अपनी ख़िलाफत में शाम का गर्वनर बनाया था। जहां उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारी अच्छे ढंग से पूरी की। हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत के बाद उनमें और हज़रत अली रज़ि0 में इख्तिलाफ़ हुआ जो हज़रत अली रज़ि0 की वफ़ात तक क़ायम रहा।

कुछ कम उम्र सहाबा-

कम उम्र सहाबा में जिनको बचपन से इसलाम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहनुमाई हासिल हुई, उनकी भी एक अच्छी संख्या है। उनमें जिनको बाद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भी रहनुमाई (पथ प्रदर्शन) और दीक्षा के नतीजे में दीन की जो समझ हासिल हुई उसमें उन्होंने दूसरों को बहुत फ़ायदा पहुंचाया और इस वक्त जो दीन की मालूमात का ख़ज़ाना है उनके हासिल करने में ख़ास तौर पर ज़रिया बने। उनमें ख़ास तौर पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अनस बिन मालिक और उसामा बिन ज़ैद और खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हुम हैं और यह वह लोग हैं जिनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तअल्लुक रहा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा अगरचे चचाज़ाद भाई थे, मगर एक तरह औलाद के समान थे। उनकी खाला उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में थीं। और उन्हें इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर होने का बार बार मौक़ा मिलता रहा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मौक़े पर खुश हो कर यह दुआ की कि "ऐ अल्लाह इनको हिकमत (ज्ञान) की तालीम दे[1]" चुनांचे वह जमाअते सहाबा में इस खूबी में नुमायां हुए और हज़रत उमर रज़ि0 उनसे मशविरा लेते और उनको बाज़ बड़े सहाबा पर इस सिलसिले में फ़ौकियत (प्रधानता) देते।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 उन सहाबा क़िराम में से एक हैं जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कुर्ब (निकटता) और विश्वास प्राप्त हुआ। उनकी बहन उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़िअल्लाहु अन्हा थीं, उनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके भाई की तअरीफ़ भी फरमाई थी और नेक इंसान भी कहा था। वह इल्म व तफ़क्कोह (शास्त्र ज्ञान) में भी एक मुकाम रखते थे। इसमें उनसे बाज़ सहाबा व ताबेईन की एक जमाअत ने फायदा हासिल किया।

1. सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िब अब्दुल्लाह बिन अब्बास।

हज़रत नाफ़े उस्ताद इमाम मालिक उनके ख़ास शागिर्द हैं। मक्का मुअज़्ज़मा में सन् 73 हिजरी को 86 साल की उम्र में इन्तिक़ाल किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु-

कम उम्री से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत को क़ुबूल करके आप पर मर मिटे। आचार, व्यवहार, काम करने का ढंग, चरित्र व आचरण इन सबमें सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत क़रीब थे। इल्म व तफ़क्कोह में भी बहुत बढ़े हुए थे। फ़िकह हनफ़ी (धर्मशास्त्र) का बड़ा मरजअ़ उनका इल्म फिक्ह है। 32 हिजरी में जबकि आपकी उम्र 60 साल से ज़्यादा थी वफात पायी। साबिक़ीन अव्वलीन में हैं।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु-

अनस बिन मालिक बिन नज़र नाम है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना तशरीफ़ लाए तो उस वक्त 10 साल के थे। खिदमत गुज़ारी के लिए पेश किये गए। चुनांचे 10 साल हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की और पूरी मुद्दत में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी भी सख्त सुस्त नहीं कहा बल्कि अख़्लाक व सुलूक ही बरता और बड़ी दुआएं दी। जिसके असरात वह पूरी उम्र महसूस करते रहे। 100 साल से ज़्यादा उम्र पायी। बसरा में 81 हिजरी में इन्तिक़ाल किया।

हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़िअल्लाहु अन्हुमा-

यह दोनों हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बड़े चहीते नवासे हैं, जिनसे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न सिर्फ ऊँची उम्मीदें थीं बल्कि उनके सिलसिले में बशारत के जुमले (वाक्य) भी सुनाए और फ़रमाया कि "हसन और हुसैन जन्नत के नौजवानों के सरदार होंगे।" इन दोनों को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एकरूपता भी थी और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह फ़रमाते हुए भी सुना गया कि "यह दोनो मेरे बेटे हैं और मेरी बेटी के बेटे हैं, ऐ अल्लाह मैं इन दोनों से महब्बत करता हूँ आप भी इन दोनों से महब्बत फ़रमाईये और जो इन दोनों को चाहे आप भी चाहिए[1]।"

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़िअल्लाहु अन्हु-

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के बेटे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महबूब हैं। इनको "हिब्बु रसूलिल्लाह" कहा जाता था। वफ़ात से पहले एक लश्कर की क़यादत (नेतृत्व) इन्होंने की थी। मदीना तय्यबा में सन् 54 हिजरी में वफ़ात पायी।

यह थे मुसलमानों के असलाफ़ (पूर्वज) जिनको देख कर ईमान ताज़ा होता है और नेक अमल की रग़बत होती है। उनकी सीरतें (चरित्र) उनके हालात हमारी नई नस्लों के सामने आते रहने चाहिएं ताकि उनसे फ़ायदा हासिल हो सके। मिसाल के तौर पर कुछ सहाबा के संक्षिप्त

---

1. सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िब हसन व हुसैन रज़िअल्लाहु अनहुमा।

शेष पृष्ठ .....24...पर..

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां ख़ुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 —अनु0 मु0 हसन अंसारी

कुर्आन मजीद जो तहरीफ़ (परिवर्तन) व तबदीली से महफ़ूज़ और क़यामत तक बाक़ी रहने वाली वाहिद आसमानी किताब है और नबियों की सीरत में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत, जिस पर तारीख़ी व इल्मी एतबार से भरोसा किया जाता है, में कसरत, से इसके दलायल मिलते हैं। नीचे इसकी कुछ मिसालें दी जाती हैं।

इस लिससिले में सबसे नुमायां वह आयत है जिसमें अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तहम्मुल (धैर्य) और नर्मदिली की खास तौर पर तारीफ़ की है:—

तर्जुमा *" बेशक इब्राहीम बड़े तहम्मुल वाले, नर्म दिल और रुजू करने वाले थे" ।*

(सूरे हूद—75)

और उनके साथियों के बारे में इरशाद होता है:—

तर्जुमा *" तुम्हें इब्राहीम अलै0 और उनके साथियों की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है, जब उन्होंने अपनी क़ौम के लोगों से कहा हम तुम से उन बुतों से जिनको तुम खुदा के सिवा पूजते हो, बेतअल्लुक़ हैं (और) तुम्हारे माबूदों के (कभी) क़ायल नहीं हो सकते और जब तक तुम एक खुदा पर ईमान न लाओ हम में तुम में हमेशा खुली हुई अदावत रहेगी। हाँ, इब्राहीम अलै0 ने अपने बाप से यह (ज़रूर) कहा कि मैं आपके लिए मग़फ़िरत माँगूंगा, और मैं खुदा के सामने आपके बारे में किसी चीज़ का कुछ अख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे परवरदिगार तुझी पर हमारा भरोसा है, और तेरे ही तरफ़ हम रुजू करते हैं, और तेरे ही हुजूर में हमें लौट जाना है।"(सूरः अलमुमतहना—4)*

अक़ीदा की अहमियत का अन्दाज़ा इस बात से बख़ूबी हो सकता है कि सूरः अल्काफ़िरून मक्का में उस वक़्त नाज़िल हुई जब वहां के हालात इस मसले को उस वक़्त तक मुल्तवी रखने के हक़ में थे जब तक इस्लाम को ताक़त न हासिल हो जाये। लेकिन ऐसा नहीं किया गया। कुर्आन ने साफ़—साफ़ ऐलान किया:—

तर्जुमा *" ऐ पैग़म्बर इन मुनकिराने इस्लाम से कह दो कि ऐ काफ़िरो जिन (बुतों) को तुम पूजते हो मैं नहीं पूजता, और जिस (खुदा) की मैं इबादत करता हूँ, उसकी तुम इबादत नहीं करते और मैं फिर कहता हूँ कि जिनकी तुम पूजा करते हो मैं उनकी पूजा करने वाला नहीं हूँ, और न तुम उसकी बन्दगी करने वाले (मालूम होते) हो, जिसकी मैं बन्दगी करता हूँ, तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर।" (सूरः अल्काफ़िरून)*

अगर अक़ीदा के मामले में किसी को ढील दी जा सकती है तो इसके मुस्तहक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा अबूतालिब थे क्योंकि वह ज़िन्दगी भर आपकेलिए सीना सिपर रहे और जान माल कुर्बान करते रहें सीरत निगार की एक राय है कि "वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए सिपर (ढाल) और हिसार (क़िला) बने हुए थे

और अपनी पूरी क़ौम के ख़िलाफ़ आपके नासिर और हामी थे।" लेकिन सही रवायतों से यह साबित है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू तालिब की मौत के वक़्त उनके पास तशरीफ़ ले गये, (उस वक़्त अबूजहल और अब्दुल्लाह बिन अबी उमैया भी वहां बैठे थे) तो फ़रमाया, "ऐ चचा। आप "ला इलाहा इल्लल्लाह" कह दीजिए, मैं इस कल्मे की ख़ुदा के यहां गवाही दूंगा।" तो अबूजहल और इब्न अबी उमैया कहने लगे, "अबूतालिब! क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब से फिर जाओगे? तो अबूतालिब ने यह कहते हुए जान दी कि अब्दुल मुत्तलिब के मज़हब पर हूँ। सही रवायत में आता है कि "हज़रत अब्बास रज़ि0 ने अल्लाह के रसूल से अर्ज़ किया कि अबू तालिब आप की हिफ़ाज़त और मदद करते थे और आपको बहुत चाहते थे और आपके लिए वह लोगों की नाराज़गी की बिल्कुल परवाह नहीं करते थे क्या इसका फ़ायदा उनको पहुंचेगा? आपने फ़रमाया कि मैंने उनको आग की लपटों में पाया और मामूली आग तक निकाल लाया।"

इसी तरह इमाम मुस्लिम ने हज़रत आयशा रज़ि0 की रवायत नक़ल किया है कि "मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल इब्न जदआन जाहिलियत के ज़माने में बड़ी सिलह रहमी करते थे, मिसकीनों और ग़रीबों को खाना खिलाते थे तो क्या उनके लिए यह सूदमन्द होगा"? आपने फरमाया "नहीं" इनको इससे कोई फ़ायदा हासिल न होगा क्योंकि उन्होंने कभी नहीं कहा कि, "ऐ मेरे रब! रोज़े जज़ा (परलय के दिन) को मेरे गुनाह बख़्श दीजिएगा"।

हज़रत आयशा रज़ि0 एक रवायत में फ़रमाती हैं "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बदर की तरफ़ रवाना हुए और जब "हर्रतुलवबरा" पर पहुंचे तो एक मशहूर बहादुर आया उसे देख कर सहाबा को बड़ी खुशी हुई कि इससे इस्लाम के लशकर को ताक़त मिलेगी जिसमें सिर्फ़ 313 अफ़राद (लोग) थे। उस बहादुर और जियाले शख़्स ने आपके पास आकर अर्ज़ किया, "मैं इसलिए आया हूं कि आपके साथ चलूं और माले ग़नीमत में शरीक हूँ।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, "तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हो?" उसने कहा, "नहीं"। आपने फ़रमाया "वापस जाओ इसलिए कि मैं किसी मुशरिक से मदद नहीं ले सकता।" हज़रत आयशा रज़ि0 बयान करती हैं कि वह कुछ दूर चला और शजरा के मक़ाम पर फिर आया और अल्लह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वही पहली बात अर्ज़ की। आपने वही पहला जवाब दिया फरमाया "जाओ, मैं मुशरिक से मदद नहीं लेता"। वह चला गया और बैदा पहुंचने पर फिर आया। आपने फिर पूछा कि अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हो"? उसने कहा "हाँ"। उस वक़्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "तो चलो"।

❖❖❖

हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिए सही राहे अमल

—मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी

आप मुत्तफिक़ हों या न हों लोगों का तो यही ख़्याल है कि गर्म तकरीरों और जज़बाती बयानात से मसाएल हल होते नहीं बिगड़ते ज़रूर देखे हैं, यह माना कि सख़्त रद्दे अमल और चैलंज भरा अंदाज़ सियासी लीडरों की अपनी मजबूरी होती है, इसी से उनकी लीडरी चमकती और इसी पर उनकी वाह वाह होती है।

यह माना कि कभी कभी और कहीं कहीं सख़्त लहजा और धमकी आमेज़ रवय्या अपनाने की ज़रूरत पड़ती है, लेकिन यह भी तो सच है कि हर जगह और हर वक़्त इस लहजे में बात करना अपनी बात के असर को ज़ाएल करना, अपने क़द को छोटा करना और अपने वज़न को हलका करना है।

यह बात भी कुछ अजीब सी है कि हमारे बाज़ लीडरान जो मुस्लिम बहुमत इलाक़ों में एक सुरक्षित जगह रहते हैं वह अक्सर उन मुसलमानों को भूल जाते हैं जो ग़ैर मुस्लिम इलाक़ों में ग़ैर महफ़ूज़ (असुरक्षित) ज़गह बसते हैं, और हवा के गर्म झोंकों से कुछ ज़्यादा ही मुतअस्सिर (प्रभावित) होते हैं, गर्ममिज़ाज लीडरों को बिरादराने वतन को चैलंज देने और शासन के उत्तरदायत्तों को फटकार लगोने से पहले यह ज़रूर सोच लेना चाहिए कि उनके इस चैलंज और उनकी इस फटकार का प्रभाव उन इलाकों में क्या पड़ेगा जहां उनके भाई अल्पसंख्यक में भी हैं और चारों ओर से घिरे हुए भी, सुरक्षित क़िलों में रहने वालों को कुछ न कुछ ख़्याल झोपड़ों में रहने वालों का भी करना चाहिए, सिर्फ़ लुत्फ़ अन्दोज़ी (मनोरंजन) की ख़ातिर दुआ करने से पहले टपकती छत वालों की बेचारगी पर भी नज़र डाल लेनी चाहिए।

कट्टर हिन्दू पंथी लीडर यदि एक ओर नफ़रत की आग उगल रहे हैं तो दूसरी ओर हमारे कुछ गर्म मिज़ाज लीडर उस आग पर नफ़रत का तेल छिड़क कर उन भड़कते हुए शोलों को आसमान तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं, नफ़रत की आग जब लगती है तो बहुसंख्यक के लिए नहीं सिर्फ़ अल्पसंख्यक के लिए ही तबाहकुन (नष्टकारी) साबित होती हैं, जिसकी एक नहीं सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं, लेकिन लोगों का हाल यह है कि आप उनसे इस तरह की तक़रीरों के मनफ़ी (नकारात्मक) असरात पर गुफ़तगू करें तो वह यही कहेंगे कि फिर बुज़दिलों (कायरों) की तरह सुनते रहिए, ऐसे लोगों से सिर्फ़ यही कहा जा सकता है कि बहादुर बन कर पिटने से बेहतर है कि बुज़दिल बन कर सुन लिया जाये, बात अगरचि पुरानी है परन्तु उसका उल्लेख अनुचित नहीं होगा, बाबरी मस्जिद का मसअ़ला चल रहा था, बाराबंकी में इस तरह के कुछ गर्म मिज़ाज, पुरजोश (उत्तेजित) तक़रीर करने वालों ने अपनी शोला बयानी से माहोल में इतनी गर्मी पैदा

कर दी कि एक बड़ा फसाद (दंगा) हो गया, पुलिस फ़ाइरिंग में कई मुसलमान शहीद हो गये, उस रात मौलाना अली मियाँ रह0 देहली जा रहे थे, गर्म तक़रीर करने वालों का वही टोला स्टेशन पहुंचा और जा कर मौलाना अली मियाँ रह0 से बहादुरों की तरह नहीं बुज़दिलों (कायरों) की तरह फ़रयाद की, कि हुकूमत पर दबाव डाल कर पुलिस एकशन रुकवाइये, मौलाना ने उस वक़्त जो जुमला उनसे कहा वह भी सुन लीजिए मौलाना ने कहा "दूसरों को तो आपने शहीद करवा दिया ख़ुद शहीद नहीं हुऐ?"

इतिहास से बहुत कुछ सीखा जा सकता है, बशरते कि इतिहास का अध्ययन सीखने के इरादे से किया जाये और उससे परिणाम निकालने की कोशिश की जाये आज से 1400 साल पहले जब सूखे पहाड़ों से घिरे मक्का नामी शहर में केवल चार लोगों पर आधारित एक अल्पसंख्यक था उस में एक महिला और एक नई उम्र का बच्चा भी था इस छोटे से समूह के अतिरिक्त बहुत से क़बीलों पर आधारित बहुसंख्यक थे जिनकी दुशमनी और नफ़रत इस छोटे समूह से इतनी अधिक थी कि आज की दुनिया में किसी भी देश में उस दुशमनी और नफ़रत का दसवां हिस्सा भी किसी बहुसंख्यक को किसी अल्पसंख्यक से नहीं होगा, परन्तु थोड़ा ही समय बीता कि अल्पसंख्यक बहुसंख्यक में परिवर्तित हो गये, फिर यह बदलाव ऐसा आया कि अब तक वहां कोई अल्पसंख्यक नहीं, जहां कल शतप्रतिशत कुफ़्र था आज वहां शत प्रतिशत इस्लाम है।

क्या मक्के के उस अल्पसंख्यक का तजुर्बा (अनुभव) आज दोहराया नहीं जा सकता? क्या दुशमनी का जवाब दोस्ती से, नफ़रत का महब्बत से, दुरव्यवहार का सद्व्यवहार से, झूठ का सच से, कठोरता का नम्रता से, आग का पानी से जोश को होश से, अन्याय का न्याय से, कड़वे बोल का मीठे बोल से नहीं दिया जा सकता? यूं तो हम कहते रहते हैं कि हमारे लिए नमूना (आदर्श) केवल हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं और हमारे नबी के सहाबा रज़िअल्लाहु अनहुम हैं, लेकिन क्या उन नमूनों (आदर्शों) को अपनाने की कोशिश करते हैं।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुशमनों की दुशमनी का जवाब कैसे दिया? क्या उसी तरह जिस तरह हम दे रहे हैं? देखिए मक्का के फ़तेह (विजय) के मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तर्ज़ेअमल (कार्य प्रणाली) हमें क्या राह दिखा रहा है, फ़तह मक्का के दिन जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुना कि सअ़द बिन उबादह रज़ि0 ने अबू सुफ़यान को देख कर कहा "आज का दिन बदले का दिन है, आज कअ़बा में आज़ादी के साथ अमल किया जायेगा, आज अल्लाह ने क़ुरैश को ज़लील किया है।" तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन शब्दों के बदले में यह एलान फ़रमाया "आज रहमते आम का दिन है आज अल्लाह क़ुरैश को इज़्ज़त देगा, आज क़ाबा की इज़्ज़त बढ़ाई जायेगी"। इस एलान के बाद आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सअ़द बिन उबादह से झण्डा लेकर उनके बेटे को दे दिया और साथ साथ आपने अबुसुफ़यान के घर को "दारुलअमान" (शरण का घर) क़रार दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस अमल का नतीजा यह निकला कि अबूसुफ़यान की दुशमनी, महब्बत और अदावत दोस्ती में बदल गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो अपने दुशमनों के लिए भी तड़पते थे, व्याकुल होते थे बदला लेने के लिए नहीं सत्य मार्ग पर लाने के लिए, पराजित करने के लिए नही, अपने निकट लाने और अपनाने के लिए, तोड़ने के लिए नहीं, जोड़ने के लिए, आज आवश्यकता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस आचरण को अपनाया जाय और भटके हुए को राह पर लाने के लिए व्याकुल हुआ जाय।

ग़लत फ़हमी (भ्रान्ति) दूर करने, बद गुमानियां (दुर्भावनाओं) को दूर करने, लोगों के दिलों में अपने आचरण की जगह बनाने तथा देश और देशवासियों के अपने हितेशी होने का विश्वास दिलाने का अवसर पार्लिमेन्ट से अच्छा और कोई स्थान नहीं, जबकि हमारे मुस्लिम नेता इस ओर ध्यान दें, कि वह अपनी राजनीतिक पार्टी के साथ इस्लाम के भी प्रतिनिधि हैं, जहां उनको अपनी पार्टी के हित का ख़्याल रखना, उसके एजण्डे के अनुकूल काम करना और अपने राजनीतिक हितों को सामने रखना है, वहीं उनकी ज़िम्मेदारी ये भी है कि वह इस्लामिक आचरण, इस्लामिक स्वभाव और इस्लामिक मीठी बोली के द्वारा इस्लाम के विषय में पायी जाने वाली भ्रान्तियां तथा दुर्भावनायें दूर करें।

पर्लिमेन्ट में सत्ता वाले मिम्बरान होते हैं और बाल की खाल निकालने वाले अपोज़ीशन पार्टियों के मिम्बरान भी होते हैं, उनमें से अधिकांश इस्लाम और मुसलमानों से अपर्चित हाते हैं न वह इस्लामी विश्वास के विषय में, न इस्लामी स्वभाव के विषय में कुछ जानते हैं। वह कुरआन को रामायण की तरह एक पुस्तक जानते हैं और नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को राम और कृष्ण की तरह अवतार जानते हैं, वह मस्जिद को मन्दिर की भांति एक पूजा स्थल समझते हैं, और नमाज़ को मन्दिर में बजने वाले घण्टे की तरह पूजा का एक तरीक़ा।

अब आप ही सोचिए अगर पार्लिमेन्ट में इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ कोई क़ानून बनता है, अदालतों से कुरआन व हदीस के खिलाफ कोई फैसला आता है तो क्या उसमें हमारा कुसूर नहीं है? सैकड़ों साल से इस मुल्क में रहते हुए और यहां के ग़ैर मुस्लिमों के साथ मिलकर काम करते हुए हम आज तक उन्हें ये नहीं बता सके कि कुरआन कया है? हदीस क्या है? नमाज़ क्या है? जक़ात क्या है? रोज़ा क्या है हज क्या है? निकाह क्या है? विरासत क्या है? चार शादियों का मसलह क्या है? मुर्दा दफलाने में हिकमत क्या है? ख़तने का क्या लाभ है पर्दे का मक़सद क्या है? दाढ़ी का मुआमला क्या है? उस समय बात और बिगड़ जाती है, जब शासन अपनी

अज्ञानता के कारण कोई ऐसा बिल लाता है जिससे किसी शरई हुक्म का विरोध होता है तो उस पार्टी से सम्बन्धित कितने मुस्लिम मिम्बरान उस बिल का अर्थ घुमा फिरा कर बता कर बिल पास करा के पार्टी को अपना हितैशी होना सिद्ध करते हैं, जबकि दूसरी ओर अपोज़ीशन पार्टी के मुस्लिम मिम्बरान उस बिल को इस्लाम मुख़ालिफ़ (इस्लाम का विरोधी) कह कर और चिल्ला चिल्ला कर आसमान सर पर उठा लेते हैं।

पार्लीमेन्ट के मुस्लिम मिम्बरान का ये विभाजन तथा दीन का विरोध करने वाले मिम्बरान का ये कुस्वभाव शासन को ये संदेश देता है कि उनका ये विरोध प्रदर्शन केवल राजनीतिक है मज़हब, धर्म से इसका कोई लेना देना नही है इसलिए कि शासन स्वयं देखता है कि जो लोग पार्लीमेन्ट में बिल पास कराने के लिए दीन का विरोध कर रहे हैं वह अपने व्यक्तिगत जीवन में दीन अपनाए हुए हैं दीन का सहयोग करते हैं मुस्लिम मिम्बरों के कथन तथा कर्म के विलोम का प्रभाव भी शासन को उचित निर्णय लेने में रुकावट बनता है।

हर मसअले (समस्या) को राजनीतिक रंग देना और प्रदर्शन में उसको सड़क पर ले आना ज़िन्दाबाद मुर्दाबाद के नारे लगाना, अपनी मांगों का वह मार्ग अपनाना जिसे राजनीतिक पार्टियां अपनाती हैं, समस्या को और बिगाड़ देता है। लोकतांत्रिक देश में जनता की अनदेखी नहीं की जा सकती अगर हम सड़कों पर आयेंगे और भीड़ एकत्र करके अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेंगे तो दूसरे जो हमसे शक्ति में अधिक हैं हमसे संख्या में अधिक हैं वो भी यही रास्ता अपनायेंगे और ये रास्ता अल्पसंख्यक के लिए हानिकारक तथा बहुसंख्यक के लिए लाभदायक होगा। बीते समय में होने वाली घटनायें इस पर साक्षी हैं।

हमारे देश के चोटी के लीडर इस्लाम धर्म से कितना परिचित हैं जिसका अनुमान इस वाक़िये से लगाया जा सकता है कि मुस्लिम तलाक़ पायी हुई औरत के गुज़ारे के विषय पर भारत में एक युद्ध छिड़ा हुआ था राजीव गाँधी उस समय प्रधान मंत्री थे, इस समस्या के समाधान के लिए मुस्लिम प्रसनल ला बोर्ड और प्रधानमंत्री के बीच बातचीत का सिलसिला चल रहा था रमज़ान का महीना आ गया प्रधान मंत्री से अगली भेंट की जो तिथि मिली वह रमज़ान में थी उस समय प्रसनल ला बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना अली मियां रह0 थे गर्मी का महीना था, मौलाना ने राजीव गांधी को लिखा कि गर्मी का महीना है रमज़ान का मास है हम लोग रोज़ा रखते हैं सफ़र मे कठिनाई होगी अतः रमज़ान के बाद भेंट की कोई तारीख दी जाए। राजीव गांधी ने अपनी अज्ञानता से जो उत्तर दिया वह बड़ा आश्चर्य जनक है उन्होंने कहा मौलाना साहब आप लोग रोज़ा जाड़ों में क्यों नहीं रख लेते। मौलाना ने कहा महोदय यह बात कहीं और न कह दीजिएगा। वरना इससे शाहबानो केस से बढ़ कर उपद्रव होगा। यहां आश्चर्य जनक बात ये है कि हमारे देश का प्रधानमंत्री भी इस्लाम के विषय में कितनी कम जानकारी रखता है।

बात हसने की नहीं रोने की है कि ऐसा देश जिसमें 25 करोड़ मुसलमान रहते हों और 100 करोड़ बहुसंख्यक लोग रहते हों उसका प्रधान मंत्री देश के मुस्लिम समुदाय के धर्म के विषय में इतनी कम जानकारी रखता हो।

पार्लीमेन्ट में प्रस्तुत किये जाने वाले और विषय से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा में हमारी कोताही किस सीमा तक है, कुछ देर के लिए यह विषय छोड़ दीजिए, अदालतों में फैसलों पर जरा नज़र डालिए मुस्लिम वकीलों की ओर से इस्लामी शरीअत का ग़लत अर्थ प्रस्तुत करना और शरीअत की गलत तशरीह (व्याख्या) के आधार पर गैर मुस्लिम जजों के इस्लाम विरोधी फैसलों पर निन्दा उन जजों को नहीं मुस्लिम वकीलों की कीजिये, वह अपने मुवक्किलों को जिताने के लिए जाइज़ व नाजाइज के कोई चिन्ता नहीं करते बस उनका मुवक्लि जैसे तैसे भी जीते। वह कुर्आन की आयतों तथा हदीसों का ग़लत अर्थ बताने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाते। फिक़ही मसाइल का ग़लत अर्थ बता कर अदालत में इस्लाम के विरुध फैसला करवा देते हैं। फिर यह फैसला अदालत का उदाहरण बन जाता है और दूसरे जज भी उसी आधार पर फैसला देने लगते हैं जब कि वह उदाहरण गलत होता है। कुछ दिनों पहले की बात है एक अदालत में मकान के हिबा (भूमिदान) का विवाद गया किसी गैर मुस्लिम ने कुछ मुस्लिम औरतों को वह मकान हिबा किया था, अदालत में किसी तीसरे ने उसके विरोध में चैलेंज किया था, मुस्लिम वकील ने अदालत में यह ग़लत तर्क प्रस्तुत किया कि इस्लाम में मकान हिबा (भूमिदान) के लिए हिबा करने वाले और जिसको हिबा किया जाए दोनों का मुसलमान होना ज़रूरी है।

उन मुस्लिम औरतों के पास हिबा नामा (दान पत्र) था परन्तु मुस्लिम वकील के इस ग़लत तर्क से अदालत कनफ़्यूज़ हुई इस केस में वह मुस्लिम वकील दो टकों के लिए अपने धर्म को भेंट चढ़ा रहा था और अदालत से ग़लत फैसला करवा रहा था।

एक दूसरी घटना लखनऊ ही की है एक पुरानी बोसीदा (जीर्ण) मस्जिद गिरा कर नई बनाई जा रही थी मस्जिद से सम्बन्धित कुछ दुकाने थीं जो मुसलमानों को अलाट थीं वह भी गिरा कर मस्जिद में शामिल की जा रहीं थीं, उन मुसलमान दुकानदारों ने अदालत में मुकद्मा कायम किया और उसमें कहा कि यह मस्जिद नहीं तिजारती कॉम्पलेक्स बनाया जा रहा है, वक्फ बोर्ड का वकील भी ढीला ढाला था, करीब था कि मस्जिद के विरोध में फैसला हो जाये वह तो भला हो उन हिन्दू भाईयों का जिनकी दुकाने मस्जिद के आस पास थीं उन्होंने गवाही दी कि यहां पुरानी जीर्ण मस्जिद थी जो नई की जा रही है इस तरह मस्जिद बच गई सोचिए अगर मस्जिद के विरोध में फैसला हो जाता तो कितना बड़ा मसअला (विवाद) पैदा हो जाता जो मुसलमानों ही का किया धरा था।

शाह बानों का मसअला चल रहा था मुस्लिम प्रस्नल ला बोर्ड के प्रयास से, प्रधानमंत्री उस केस के विरोध और इस्लाम के हक में बिल लाने पर सहमत हो गये थे

उसी समय एक मुसलमान पार्लीमेन्ट मिम्बर आरिफ मुहम्मद खाँ शरीअत की गलत तशरीह (व्याख्या) करके प्रधानमंत्री की ओर से लाये जाने वाले बिल के खिलाफ पार्लिमेन्ट के दूसरे मिम्बरों को बहस के लिए और विरोध में वोट देने के लिए तैयार कर रहे थे, उन्होंने इस विषय पर जो ग़लत तकरीर की थी वह मुसलमानों के लिए बड़ी कष्ट दायक थी वह तो भला हो केन्द्रीय मंत्री ज़ियाउर्रहमान का उन्होंने अल्लाह की तौफीक से पार्लिमेन्ट में ऐसी तकरीर की कि आरिफ मुहम्मद खाँ के ग़लत तर्कों की हवा निकल गई, और तलाक़ पाई हुई औरत के खर्च के विषय में सही इस्लामी मौकिफ इस प्रकार प्रस्तुत किया कि किसी को कोई संकोच न रहा अन्तः वह प्रधानमंत्री का प्रस्तुत किया हुआ बिल जो इस्लाम के हक में था पास हो गया। जब कि आरिफ मुहम्मद खाँ ने पूरी कोशिश कर ली थी कि यह इस्लाम मुवाफिक बिल मंजूर न हो।

अदालतों के मुकद्दमों में मुस्लिम वकीलों की बहसें सुनें तो हैरान रह जायें दाढ़ी की मुवाफकत (सहमति) में बहस करने वाला वकील भी मुसलमान और उसके विरोध में तर्क प्रस्तुत करने वाला वकील भी मुसलमान।

इस्लाम में औरतों के लिए पर्दा ज़रूरी सिद्ध करने वाला वकील भी मुसलमान और पर्दे को मुस्लिम औरतों के लिए गैर ज़रूरी साबित करने वाला वकील भी मुसलमान।

शरीअत की मुवाफकत (सहमति) में बहस करने वाला वकील भी मुसलमान और अदालत में शरीअत के विरोध में बोलने वाला वकील भी मुसलमान, अदालत में शरई हुक्म के विरोध में मुकद्दमा प्रस्तुत करने वाला वकील भी मुसलमान अब आप ही बताइये कि सेकूलर हुकूमत क्या करे?

इसका यह अर्थ नहीं कि यहाँ जो कुछ हो रहा है वह भ्रान्त के आधार पर हो रहा है और दोष मुसलमानों का है ऐसा नहीं है वास्तव में यहां के मिश्रित समाज में कुछ ऐसे इस्लाम विरोधी तत्व रहते हैं जो केवल टकराव चाहते हैं, टकराव के तरीके अपनाते हैं मुसलमानों को क्रोध में लाते हैं उनको उत्तेजित करते हैं, उनको कठोर शब्द बोलने पर उभारते हैं उनकी गैरत को ललकारते हैं उनके स्वाभिमान को जोश दिलाते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि मुसलमान उत्तेजित हो कर वह कर गुजरते हैं कि उससे वातावरण बिगड़ जाता है और मुसलमानों का विरोध उत्पन्न हो जाता है।

ऐसे लोगों से कैसे निमटा जाये? उसका अच्छा तरीका तो यह है कि निम्नलिखित बातों को अपनाया जायेः—

1. किसी विवाद में अनावश्यक भाग न लिया जाये।

2. ऐसे लोगों के खिलाफ जो वातावरण बिगाड़ते हैं मुस्लिम वकीलों तथा गैर मुस्लिम दक्ष वकीलों से मदद लेकर अदालती कारवाई की जाये।

3. गम्भीरता के साथ उनकी ग़लत बातों का उचित उत्तर दे कर जनता का मस्तिष्क साफ किया जाये।

4. ऐसे लोग जो इस्लाम विरोध में बोलते हैं और मुसलमानों में बिगाड़ पैदा करते हैं ठण्ड़े दिल से उनसे मिलना चाहिए उनके सामने इस्लाम का सत्य रखाना चाहिए और इस्लामिक आचरण से उनको प्रभावित करना चाहिए सत्य तथा इस्लामिक आचरण में बड़ी शक्ति है इस्लामिक आचरण से तो पत्थर भी मोम हो जाता है बस हमारे अन्दर हिकमत से और इख्लास से बात करने का हुनर होना चाहिए। टकराव करके तो बहुत कुछ देख लिया अब टकराव छोड़ कर, अलगाव त्याग कर जोड़ का प्रयास करके उसका परिणाम देख लें।

हमारी कोताही यह है कि हमने अपने वतनी भाईयों तक इस्लाम का शुद्ध परिचय न पहुंचा सके न अपने इस्लामी इख्लास (निः स्वार्थता) से उनको अवगत करा सके यह काम करने के हैं और यही इस देश में हमारे लिए सही राहे अमल है। अर्थात शुद्ध कार्य प्रणाली है।

❖❖❖

जगनायक .....

में हालात बयान किये गये हैं सहाबा की जमाअत का हर फर्द अपनी जगह उम्मत था। हज़रत अबू दुजाना, हज़रत खुबैब, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रतकअ़ब बिन मालिक, हज़रत हस्सान बिन साबित, हज़रत ज़ैद बिन साबित, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत मुगीरा बिन शोअबा, हज़रत अबू अय्यूब अंसारी, हज़रत अनस बिन नज़र अल्लाह उन सबसे राज़ी हो उन सबके महान कारनामे और कुर्बानियाँ किसी से पोशिदा नहीं।

और इसी तरह साहाबियात में उम्महातुल मोमिनीन (ईमान वालों की माँएं) यानी अज़वाज मुतह्हरात (पाक बीवियाँ) को और बनाते ताहिरात (पाक बेटियाँ) को छोड़ कर जिन्होंने दीन को ताकत पहुंचाने और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को राहत देने में कोई कसर नहीं छोड़ी और हौसलामंदी व बुलन्द हिम्मती से काम लिया। सहाबियात में और भी ऐसे नाम मिलते हैं, जैसे हज़रत सुमय्या रज़िअल्लाहु अन्हा जो इस्लाम की पहली शहीद ख़ातून हैं, जईफ बूढ़ी थीं मगर अबू जहल ने इस्लाम की दुश्मनी में उनकी शर्मगाह पर बर्छी मार कर शहीद कर दिया। फिर हज़रत ख़नसा की बहादुरी की मिसाल दी जाती है, जिनके चार जवान बेटे शहीद हो गए और सब्र व इस्तिक़ामत (स्थिरता) का पहाड़ बनी रहीं और इसी तरह हज़रत सफ़िया रज़िअल्लाहु अन्हा जो कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी थीं, हज़रत असमा बिन्त अबूबक्र सिद्दीक जो कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की माँ हैं, उनके अलावा हज़रत उम्मेहानी, हज़रत उम्मे ऐमन की ख़िदमात के ज़िक्र से सीरत की किताबें खाली नहीं। अल्लाह तआला उन सबको बेहतरीन बदला अता फ़रमाए और खूब खूब रहमतें उन पर नाज़िल फ़रमाए, रज़िअल्लाहु अन्हुम व रजुअन्हु अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह सब उससे राज़ी हुए।

❖❖❖

तबलीग़ की अहमियत (महत्व)

—मौलाना सै0 सुलैमान नदवी रह0

नीतिज्ञता के साथ तबलीग़ व दअ़वत अर्थात "भलाई का हुक्म देना, बुराई से रोकना" इस्लाम के शरीर के रीढ़ की हड्डी है, इस पर इस्लाम की बुन्याद, इस्लाम की कूवत, इस्लाम की वसअ़त (फैलाव) और इस्लाम की कामयाबी निर्धारित है और आज सब ज़मानों से बढ़ कर इसकी ज़रूरत है और ग़ैर मुसलमानों को मुसलमान बनाने से ज़ियादह अहम काम मुसलमानों को मुसलमान बनाना यानि, नाम के मुसलमानों को काम का मुसलमान बनाना है। सच है कि आज मुसलमानों की हालत देख कर क़ुरआन पाक की यह आवाज़—

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू" ऐ मुसलमानो! मुसलमान बनो, को पूरे ज़ोर शोर से बलन्द किया जाये, शहर—शहर, गाँव—गाँव और दर—दर फिर कर मुसलमानों को मुसलमान बनाने का काम किया जाये, और इस राह में वह जफ़ाकशी, वह मेहनतकशी (परिश्रम) और वह अथाह शक्ति ख़र्च की जाये जो दुन्या वाले दुन्या की शक्ति और सम्मान प्राप्त करने के लिए खर्च कर रहे हैं जिसमें उद्देश्य को पाने के लिए बहु मूल्य पूंजी त्यागने और रास्ते से हर रुकावट दूर करने के लिए असाध्य शक्ति पैदा होती है। कशिश से कोशिश से (आकर्षण और प्रयत्न से) जान व माल से, हर राह से इसमें क़दम आगे बढ़ाया जाये, और मक़सद (लक्ष्य) को पाने के लिए वह जुनून की कैफियत (उन्मादी दशा) अपने अन्दर पैदा की जाये जिसके बिना दीन व दुनिया का न कोई काम हुआ है और न होगा। ◆◇◆

सेब का लाभ —इदारा

सेब प्रफुल्लता प्रदान करता है, हृदय, मस्तिष्क, कलेजे को शक्ति देता है, आमाशय को शक्तिवान बनाता है, तथा उसके ऊपरी भाग के दर्द को दूर करता है, आमाशय की वायु को निकालता है, हृदय की घबराहट को दूर करता है, साँस फूलने के रोग में लाभदायक है, सेब खाने से भूख खूब लगती है, इससे खून शीघ्र बनता है, सेब मुखड़े के रंग को निखारता है, सेब का मुरब्बा बड़ा स्वादिष्ट, मनभावन तथा शक्ति प्रदान करने वाला और मन को आनन्द देने वाला होता है, सेब का मुरब्बा खाने से दिल की धड़कन दूर हो जाती है, यह सारे लाभ मीठे सेब में पाये जाते हैं, खट्टे सेब में यह लाभ नहीं पाये जाते। ◆◇◆

हमारी निम्नता का वास्तविक कारण

—मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

आज कल जो मुसलमानों के हालात हैं वह किसी से छुपे हुए नहीं हैं, चाहे राजनैतिक मैदान हो या सामाजिक हर जगह मुसलमान निम्नता (पस्ती) के शिकार हो रहे हैं, इसका सबसे बड़ा कारण इस्लामी तथा मिल्ली भावनाओं से दूरी है, हमारे पूर्वज हर समस्या को इस्लामी दृष्टि से देखते थे, व्यक्तिगत लाभ या हानि उनके सामने नहीं रहता था, उसका परिणाम यह था कि मुसलमान हर मैदान में प्रगति पर थे, जो बातें केवल दीन से सम्बन्धित होती थीं या सांसारिक तथा शासन से संबंधित होती थीं सब उच्च स्तर की होतीं दुन्या की गैर मुस्लिम कौमें उनको देख कर और उनके स्भाव से इतनी प्रभावित होती थीं कि इस्लाम स्वीकार कर लेतीं। मुसलमानों का उच्च आचरण ऐसा था कि यदि युद्ध में कोई मुसलमान किसी विरोधी शत्रु को शरण दे देता तो सारे मुसलमान उसका आदर करते और विरोध न करते।

लेकिन आज हमारा क्या हाल है ? समाज में लोग एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते भाई भाई से होशियार रहता है, हर परिवार आपसी झगड़ों से परेशान रहता है, एक दूसरे की हानि पर दुखी होने के बजाए प्रसन्न होते हैं एक दूसरे का सहयोग करना तो दूर की बात है।

दूसरी क़ौम के लोग हमारे पूर्वजों के पास बड़ी से बड़ी रकम धरोहर रखते थे आज वह हमसे छोटे से छोटा मुआमला करने से बचते हैं। व्यापारिक छेत्र में आज मुसलमानों का कोई स्थान नहीं रह गया है।

जेलों में मुसलमानों की संख्या उनकी कुल संख्या के अनुपात से कहीं अधिक है बड़े से बड़े अपराध करने वाले मुसलमान मिलेंगे। शिक्षा में पीछे, व्यापार में पीछे, राजनीति में पीछे, सरकारी नौकरियों में पीछे, जन कल्याण के कामों में पीछे तात्पर्य यह है कि पिछड़े रहना उनका वास्तविक जीवन बन गया है।

क्या अब भी समय नहीं आया कि हम ध्यान दें कि हम कहां जा रहे हैं? क्या इसी प्रकार गिरते जायेंगे क्या विनाश तथा बरबादी हमारा भाग्य बन जायेगी?

❖❖❖

कूँडे की रस्म

22 रजब हज़रत मुआ़विया रज़िअल्लाहु अन्हु की वफात का दिन है उनके बाज़ मुखालिफों ने उस दिन खुशी मनाने के लिए कूँडे की रस्म निकाली और खुशी में मिठाई खाने खिलाने के लिए हज़रत जाफर सादिक़ की फातिहा का नाम दिया, 22 रजब हज़रत जाफर सादिक़ रह0 की न पैदाइश का दिन है न वफात का दिन। सुन्नी मुसलमानों को इस रस्म से दूर रहना चाहिए। ◆◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाजे जनाज़ा किसने पढ़ाई?

उत्तरः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाजे जनाज़ा में कोई इमाम नहीं था, बिला इमाम लोग आते रहे और नमाज़ पढ़ते रहे, इस तरह बारी बारी सहा—बए—किराम रज़ि0 ने नमाज़े जनाज़ह हज़रत आइशा रज़ि0 के हुजरे में अदा की, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी प्रकार वसीयत फरमाई थी।

(फत्हुल बारीः 1/252)

प्रश्नः क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रौ—ज़ए—अतहर में हयात हैं, क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुरूद व सलाम सुनते हैं?

उत्तरः अहले सुन्नत वल जमाअ़त का अ़क़ीदा यही है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रौ—ज़ए— अतहर में हयात से हैं, आपको एक ख़ास किस्म की बरज़ख़ी हयात हासिल है, शुहदा के बारे में भी कुर्आन में हयात का तजकिरा है, लेकिन अंबिया की हयात शुहदा से अकवा (उत्तम) है यह बात रवायतों से साबित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन लोगों के दुरूद व सलाम सुनते हैं जो कब्रे शरीफ के पास खड़े हो कर पढ़ते हैं और जो दूर से पढ़ते हैं वह फिरिश्तों द्वारा आप तक पहुँचाये जाते हैं।

(मिशकातः 1/87)

प्रश्नः क्या तमाम अम्बिंया अ़0 को नुबूवत आखरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते से मिली या बराहे रास्त? बाज लोग यह अ़क़ीदा रखते हैं कि तमाम अम्बिया अ़0 को नुबूवत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तुफैल में मिली है, क्या यह ख़्याल दुरुस्त है?

उत्तरः जम्हूर उलमा का अक़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला ने हर नबी को बराहे रास्त अपनी कौम में मबऊस फरमाया (भेजा) और किताबें भी उन पर उतारीं, अलबत्ता बाज आरिफीन (महापुरूषा) का ख्याल है कि आखरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते से दूसरे अम्बिया को नुबूवत मिली लेकिन उम्मत का वही अ़क़ीदा होना चाहिए जो जम्हूर उलमा का है।

प्रश्नः क्या नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी के लिए बद दुआ की है? लोग कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहमतुल—लिल—आलमीन थे इसलिए बद दुआ नहीं कर सकते हैं, बाज लोग यह कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसरा (ईरान के शाह) के लिए उस वक्त बद दुआ की थी जब उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खत को फाड़ दिया था, सही क्या है?

उत्तरः नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यकीनन रहमत बना कर दुन्या में भेजे

गये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरापा रहमत थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफा बद दुआ की नहीं थी बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुशमनों तक को दुआएं दी हैं लेकिन बाज बद बख़्त (बुरे लोग) ऐसे थे जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दुआ क्या लेते शाने नुबूवत में गुस्ताखी करके बद दुआ के मुस्तहिक (मागी) हुये, ईरान के शाह ने घमण्ड़ में आपके खत को फाड़ दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उसके भी इसी तरह टुकड़े कर दिये जायें (बुखारी)। इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जालिमों के हक़ में बद दुआ की और कुनूते नाजिला (विशेष श्राप) पढ़ी है, खुलासा यह है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी जात के लिए बदला नहीं लेते थे लेकिन अगर कोई अल्लाह के हुक्मों की खिलाफ वर्जी (विरोध) करता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुआफ न फरमाते। यह बात आपके रहमत होने के खिलाफ नहीं है अल्लाह तआला जो अरहमुर्राहिमीन है उसने जालिमों के लिए जहन्नम बनाया है।

प्रश्नः सीरत की किताबों में है कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाई हलीमा के कबीले में थे, उस वक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक सीना चाक किया गया (खोला गया) इसी तरह शबे मेराज में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हतीमे काबा में सीना खोला गया, क्या यह सही है?

उत्तरः दोनों मौक़ों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक सीना हुक्मे खुदावन्दी से हज़रत जिब्रील अलै0 ने चाक फरमाया है, पहला वाकिआ सही मुस्लिम में है और दूसरा वाकिया बुखारी व मुस्लिम दोनों में है और हदीसें सही हैं इसी तरह दीगर मुस्तनद किताबों में भी यह वाकिये मौजूद हैं।

प्रश्नः हिन्दोस्ता के बाज इलाक़ों में मुसलमान नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के दिन की शब, रात भर मस्जिदों में इबादत करते हैं और शबे विलादते नबी के तौर पर जश्न मनाते हैं क्या इस्लामी शरअ़ में इसकी इजाज़त है?

उत्तरः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के दिन या उसकी रात में जश्न मनाना या रात भर इबादत करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाबा रज़ि0 और सलफे सालिहीन से साबित नहीं है और जिन रातों में जाग कर इबादत करने की फजीलतें अहादीस में आई हैं, उनमें भी इज्तिमाई तौर पर इबादत करना मना है बल्कि अकेले अकेले इबादत करने की इजाज़त है, फुक़हा ने इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) की है।

(मराकिल फलाहः 241)

प्रश्नः एक शख़्स पर हज फर्ज़ हुआ मगर वह हज पर न जा सके, और हज के लिए जो रकम जमा की थी अपने एक लड़के को तिजारत के लिए दे दिया, अल्लाह की मर्ज़ी तिजारत ना काम हुई और रक़म खत्म हो गई तो क्या उन पर हज़ फर्ज न रहा अब उनका दूसरा बेटा अपने पैसे से उनको हज पर भेज रहा है, अब उनका यह हज फ़र्ज होगा या नफ्ल?

उत्तर: जब एक शख़्स पर हज फर्ज हुआ और उसने वक्त पा कर हज न किया और हज की रक़म जाये हो गई तो उस पर हज न करने का गुनाह हुआ और उस पर हज अदा करने का फर्ज बाकी रहा, अब दूसरा लड़का उनको हज पर भेज रहा है तो उनका यह हज फर्ज अदा होगा।

बदाये सनाये में है कि अगर हज की रकम को हज के अलावा में खर्च कर दिया तो वह गुनहगार होगा और हज उसके ज़िम्मे रहेगा।

(बदाये सनाये 302/2)

प्रश्न: एक शख़्स पर हज फर्ज हो चुका था मगर किसी वजह से उसका माल खो गया, अब उसके पास हज के सफर का खर्च नही रहा, क्या उसके जिम्मे हज करने का फर्ज़ बाकी रहा या मुआ़फ हो गया?

उत्तर: जिस पर हज फर्ज हुआ मगर हज का वक्त आने से पहले हज के सफर की रकम जाये हो गई तो उस पर हज फर्ज न रहा लेकिन हज का वक्त आ गया और उसने अपने इरादे से हज का सफर न किया और माल जाये हो गया तो उस पर हज का फर्ज अदा करना बाकी रहा और उस पर हज न करने का गुनाह होगा।

(फतावा अलमगीरी 219/1)

प्रश्न: एक शख़्स के पास हज के सफर का खर्च था मगर हज का फार्म भरने से पहले उसको एक मकान खरीदने की ज़रूरत पड़ गई और सारी रकम उसी में खर्च हो गई अब उस पर हज फर्ज रहा या मुआफ हो गया?

उत्तर: हज का वक्त आने से पहले, हज फार्म भरने से पहले अगर रकम मकान खरीदने में खर्च हो गई तो उस पर हज फर्ज ही नहीं हुआ, अलबत्ता आइन्दा अगर हज के सफर भर की रकम जमा हो जायेगी तो हज फर्ज हो जायेगा।

(अलबहरुर्राइक़: 2/549)

प्रश्न: एक शख्स पर हज फर्ज है लेकिन उसकी जवान लड़की शादी के लायक है अब अगर वह लड़की की शादी करता है तो हज के सफर की रकम नहीं बचती है, ऐसे में वह हज पर जाये या लड़की की शादी करे?

उत्तर: जब हज फर्ज हो चुका है तो हज न छोड़े और हज अदा करे, लड़की की शादी सुन्नत के मुताबिक कर दे जिसमें कोई खर्च नहीं।

(फतावा हिन्दिया: 1/217)

प्रश्न: अगर शौहर पर हज फर्ज़ हो तो क्या बीवी पर भी हज फर्ज हो जायेगा? और क्या उन दोनों के लिए साथ साथ हज पर जाना ज़रूरी है?

उत्तर: अगर शौहर पर हज फर्ज़ हो तो बीवी पर हज फर्ज नहीं होता, हाँ अगर बीवी के पास हज करने भर का माल हो तो उस पर भी हज फर्ज होगा अलबत्ता बीवी जब हज को जायेगी तो उसके साथ शौहर का या किसी भी महरम का होना ज़रूरी है।

(अलबहरुर्राइक: 2/313)

प्रश्न: हज के सफर पर जाने के लिए क्या वालिदैन की इजाज़त जरूरी है?

उत्तर: अगर वालिदैन खिदमत के मुहताज हों और बेटे के हज पर जाने से उनको तकलीफ

शेष पृष्ठ .....36...पर..

इस्लाम की नज़र में ज्ञान की व्याख्या

—मौलवी मुजाहिद नदवी

—अनुवादः इं0 जावेद इक़बाल

इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो ज्ञान के आधार पर क़ायम है। "ज्ञान के आधार" का मतलब यह है कि यह उम्मत (मुस्लिम क़ौम) वह क़ौम है जो पहले दिन से ही ज्ञान के आधार पर खड़ी की गई है। इस क़ौम को दुनिया को बनाने वाले सृष्टा की ओर से ज्ञान को हासिल करने और उसे फैलाने (दूसरों तक पहुंचाने) की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। क़ुरआन पाक में जगह जगह पर फ़रमाया गया है— "क्या तुम देखते नहीं?", "क्या तुम ग़ौर–फिक्र (चिन्तन मनन) नहीं करते? और अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "यदि इल्म हासिल करने के लिए चीन जाना पड़े तो जाओ, उसे हासिल करो।" ज्ञान क़ुदरत का बहुत बड़ा इनआम है, ज्ञान इंसान को श्रेष्ठ–परम पद पर सुशोभित करता है, ज्ञान के मार्ग से ही दुनिया को तरक्की मिलती है और ज्ञान ही इंसान को खुदा से मिलाता है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं को मूल रूप से गुरू की संज्ञा से परिचित कराया है, फ़रमाया है कि "मैं गुरु बना कर भेजा गया हूँ"। अतः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब जगत गुरु ठहरे तो उनकी उम्मत पर भी पूरी इंसानियत के लिए मार्ग दर्शक होने की ज़िम्मेदारी आती है। इस ज़िम्मेदारी को पूरी तरह निभाने के लिए हमें सबसे पहले ज्ञान के अर्थ निश्चित करने होंगे।

इस्लाम की दृष्टि में ज्ञान एक इकाई है, उसे पूर्वी पश्चिमी, दीनी और दुन्यावी ख़ानों में बांटना इस्लाम की नज़र में उचित नहीं है। इस्लाम के अनुसार ज्ञान सृष्टा का वर्दान है जो सारी सृष्टियों में केवल इंसान को सौंपा गया है। सामान्यतः यह समझा जाता है कि क़ुरआन, हदीस, फ़िक़ह (धर्मादेश) इत्यादि जो मदरसों में पढ़ाये जाते हैं, वह धार्मिक ज्ञान है और वही वास्तविक ज्ञान है। इसके विपरीत कालेजों, यूनिवर्सिटियों इत्यादि में पढ़ाया जाने वाला ज्ञान फ़न (कला या गुण) होता है, या फिर इसे सांसारिक ज्ञान समझा जाता है। हालांकि क़ुरआन, हदीस और इतिहास का प्रत्येक ज्ञानी व्यक्ति अच्छी तरह जानता है कि मुसलमानों ने सदैव ही ज्ञान के विभिन्न विषयों को ज्ञान के रूप में ही देखा, परखा और अविष्कारित किया है। वर्तमान काल में उन्नति प्राप्त अनेक विषय हैं जिन्हें मुसलमानों ने क़ुरआन से प्रेरणा ले कर विकसित किया है। ज्ञान को सुविधा के लिए धार्मिक और सांसारिक के दो खानों में रखा जा सकता है मगर हक़ीकत में ज्ञान एक ही है उसे विभक्त नहीं किया जा सकता। दोनों प्रकार की ज्ञान शाखाओं में कोई टकराव नहीं है, न कोई उच्च है और न कोई निम्न बल्कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। धार्मिक ज्ञान के माहिर और शरीअ़त के आदेशों की व्याख्या करने

वालों को भी समयानुसार भाषा शैली (Terminology) वर्तमान व्यापार व्यवस्था (Modern Business Systems) और गणित (Mathematics) इत्यादि के ज्ञान की ज़रूरत है। इसी तरह दीनी दावत का काम करने वालों के लिए भी इलाक़े की ज़बान और मुख़ातिब की ज़हनी सतह व आस्था से सम्बन्धित ज्ञान का होना ज़रूरी है इसी तरह जिहाद के मैदान में उतरने वालों के लिए आधुनिक शस्त्रों (Moderm Weapons) और आधुनिक जंगी तरीक़ों (Moderm War Fares) का ज्ञान ज़रूरी है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 पर नुबूवत मिलने के बाद जो सबसे पहली आयत उतरी वह ज्ञान के बारे में ही थी जिसमें फ़रमाया गया है–

"पढ़ अपने रब के नाम से जो सबका बनाने वाला है, बनाया इंसान को जमे हुए रक्त से, पढ़ कि तेरा रब बड़ा कृपालु है जिसने सिखाया क़लम से, सिखाया इंसान को जो वह नहीं जानता था।" इन आयतों में अल्लाह तआला ने केवल पढ़ने का आदेश दिया है, क्या पढ़ना है यह नहीं बताया मगर इशारों इशारों में सभी तरह के ज्ञान को हासिल करने की बात कह दी है।

जो सब का बनाने वाला है (अललज़ी ख़लक़)– इस में स्पष्ट संकेत है कि हर उस चीज़ का ज्ञान हासिल करो जिसे तुम्हारे रब ने पैदा किया है। लिहाज़ा जब इंसान इस ज़मीनी गोले का अध्ययन करता है तो इसे भूगर्भ ज्ञान (Geology) कहा जाता है और इस ज्ञान की परिधि में ज़मीन के भीतर और बाहर हर चीज़ की जानकारी शामिल है यदि इंसान के शरीर के भीतर और बाहर के अंगों पर ग़ौर–फ़िक्र किया जायेगा तो इसे जीव विज्ञान (Biology) कहा जायेगा। यदि पेड़ पौधों पर ध्यान दिया जायेगा तो वनस्पति विज्ञान (Botany) कहा जायेगा, इसी तरह आकाश में ग्रहों–उपग्रहों के ज्ञान को अंतरिक्ष (Astronomy) ज्ञान, प्रत्येक वस्तु खनिज हो, गैस हो या द्रव जब उसकी बनावट पर ग़ौर किया जायेगा तो वह रसायन शास्त्र (Chemistry) कहलायेगा। सारांश में तात्पर्य यह है कि धरती आकाश के बीच जो कुछ भी सृष्टा ख़ुदा ने बनाया है वह सब ज्ञान के किसी न किसी क्षेत्र से सम्बंध रखता है। ज्ञान के यही सैकड़ों हज़ारों क्षेत्र थे जिनसे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा करके सर्वप्रथम सिखाया था। उसी सम्पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला ने अपने आखिरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और उनके वास्ते से पूरी इंसानियत को प्रेरित किया है।

फिर अल्लाह तआला ने पूरे कुरआन में जगह जगह पर अनेक प्रकार के ज्ञान का ज़िक्र किया है, कहीं पर हज़रत दाऊद अलै0 को अंगरक्षक ज़िरह (लौह कवच) बनाने के ज्ञान का ज़िक्र है तो कहीं चरणबद्ध (Stage by Stage) तरीक़े पर इंसान की पैदाइश का बयान है (23:12–16)। कहीं बादलों के बनने फिर बरसने का बयान है तो कहीं पर सूरज चांद के नियमों का पालन करते हुए अपने अपने रास्तों

पर चलने की बात बताई गई है (24:44)। कहीं समन्द्रों में बड़े बड़े जहाज़ों के चलने का ज्ञान प्राप्त करने का आह्वान है तो कहीं ज़मीन की परिधि से बाहर उड़ान भरने के चैलेंज इन शब्दों के साथ है कि "बिना शक्ति के तुम ऐसा नहीं कर सकते"। (55:33)

ज्ञान की इन सब बातों के बयान के साथ–साथ अल्लाह तआला ने हम इंसानों को ललकारा है कि तुम हमारी इन सब निशानियों को देखते हो और इन पर गौर नहीं करते, इनके बारे में खोज बीन नहीं करते। सूरः हश्र की आयत नं0 21 में फरमाया गया है कि *"हम इन मिसालों को लोगों के सामने इसलिए बयान करते हैं ताकि वे गौर फ़िक्र करें"*। नतीजा यह निकलता है कि अल्लाह तआला के निकट वे सभी ज्ञान विज्ञान, तकनीक (Technology) पसंदीदा हैं जो इंसान को खुदा की पैदा की हुई प्रत्येक चीज़ से फायदा उठाने का तरीक़ा बतायें। कुरआन पाक की इस शिक्षा का ही प्रभाव था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन सभी ज्ञान की शाखाओं को हासिल करने का आदेश दिया। हज़रत ज़ैद बिन साबित को इबरानी ज़बान सीखने का हुक्म दिया। दुशमन के मुक़ाबले के लिए मिनजनीक़ (जो उस ज़माने की तोप थी) बनाने का हुक्म दे कर हथियार बनाने का हुनर सीखने की प्रेरणा दी। अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी भी ज्ञान और विद्या का विरोध नहीं किया।

हक़ीकत यह है कि इस्लाम में ज्ञान को दीनी व दुन्यावी ख़ानों में विभाजित नहीं किया गया है अलबत्ता इस्लाम ज्ञान को लाभकारी और हानिकारक के खानों में बांटता है। इस्लाम लाभकारी ज्ञान को हासिल करने के लिए प्रेरित करता है और हानिकारक ज्ञान जैसे जादू ज्योतिष आदि का विरोध करता है।

"इस्लाम और इल्म" के पृष्ठ 21 पर मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (अली मियां) लिखते हैं–

इल्म की कड़ियां बिखरी हुई थीं, कभी कभी तो उनमें टकराव और विरोध भी हो जाता था। दर्शन शास्त्र (फ़लसफ़ा) तो धर्म का विरोधी था ही। गणित (Mathematics) और जीव विज्ञान (Biology) जैसे हितकारी इल्म (ज्ञान) के ज्ञानी भी कभी कभी विधर्मी निर्णय करते थे यही कारण था कि यूनान के विद्वान, (जिन्होंने कई सौ साल तक फ़िलासफ़ी और गणित में अपना वर्चस्व बना कर रखा) या तो बहुदेववादी थे या फिर नास्तिक थे। अतः यूनान के विद्यालय और वहां की विद्या धर्म के लिए ख़तरा और अधर्मियों के लिए प्रमाण बने हुए थे। ऐसी हालत में यह इस्लाम का एहसान हुआ कि उसने ऐसी एकता क़ायम की जिसने ज्ञान की सभी धाराओं को एक स्रोत में शामिल कर दिया। यह इसलिए हो सका कि इस्लाम के इल्मी सफ़र (ज्ञान–यात्रा) का आरम्भ जिस केन्द्र बिन्दु से हुआ था, वह एक ख़ुदा पर ईमान, उसी खुदा पर भरोसा और उसी से मदद पर निर्भर था। यह दृष्टिकोण वास्तव में कुरआन के आदेश–

शेष पृष्ठ .....36...पर..

पाश्चात्य देशों में इस्लाम का परिचय

—मौलाना जावेद अख़्तर नदवी

अल्लाह तआ़ला ने पवित्र कुर्आन में मुसलमानों को सम्बोधित करके बताया भावार्थ– *"ऐ मुसलमानों कभी तुम किसी चीज़ को अप्रिय रखते हो परन्तु अल्लाह तआला ने उसमें तुम्हारे लिए भलाई रखी होती है"* वर्षों पहले वर्डट्रेडसेन्टर पर एक विशेष लक्ष्य के अंतर्गत स्वयं सुपर पावर अमरीका ही ने आक्रमण करवाया और उसके द्वारा पूरे संसार में इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करना चाहा तथा बड़ी चालाकी के साथ यह प्रोपैगन्डा किया कि इस्लाम एक आतंकवादी धर्म है और इस्लाम के पैग़म्बर तथा कुर्आन द्वारा आतंकवाद की शिक्षा दी जाती है, तो संसार ने अपनी खुली आंखों से देखा कि न्याय प्रिय गैर मुस्लिमों ने पवित्र कुर्आन और रसूल सल्लल्लाहु व सल्लम की जीवनी का अध्ययन आरम्भ कर दिया तो उनको पवित्र कुर्आन और प्यारे नबी की जीवनी में आतंकवाद तथा अकारण रक्तपात के स्थान पर यह शिक्षा दी कि मानव तो इस्लाम और उसके पैगम्बर सल्लल्लाहु व सल्लम ने पशु पक्षियों पर भी दया की शिक्षा दी है, और प्यासे पशुओं को पानी पिलाने को पुण्य का काम बताया है जब इस्लाम में यह शिक्षा है तो उसके अनुयायी दूसरों को कष्ट कैसे दे सकते हैं? इस अध्ययन का परिणाम यह हुआ कि यूरोप के हजारों ग़ैरमुस्लिमों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और इस्लाम ने उनको प्रभावित करके अपना बना लिया।

इसी प्रकार की परिस्थिति पेरिस पर आक्रमण के पश्चात पैदा हो गई है, अतएव जहां एक ओर विभिन्न यूरोपी देशों ने इस्लाम से भयभीत करने वाले तत्व की ओर से इस्लाम और मुसलमानों पर बढ़ते हुए हमलों के साथ अब शासनो में भी यूरोप में बसी मुस्लिम कम्युनिटी की दीनी गतिविधियों को विभिन्न रूपों में सीमित करना आरम्भ कर दिया है। और कुछ बीते दिनों पहले बरतानवी शासन द्वारा बरतानिया में स्थापित दीनी मदरसों में प्रचलित की जाने वाली प्रस्तावित चुनौतियां सामने आयी हैं जिसके अन्तर्गत किसी भी साल किसी भी मदरसे की शिक्षा विभाग वाले छान बीन कर सकते हैं, तथा शासन की ओर से प्रचलित अभीष्ट शराइत पर पूरा न उतरने की दशा में मदरसे को बन्द भी किया जा सकता है, या यह कि मदरसे के किसी उस्ताद पर न पढ़ाने की पाबन्दी भी लगाई जा सकती है।

इसी प्रकार इटली ने भी घोषित कर दिया है कि देश में स्थापित उन जगहों के बन्द कर दिया जाएगा जिन जगहों को परमीशन के बिना मस्जिद की गतिविधियों के लिए प्रयोग किया जा रहा है, स्पष्ट है कि इटली में एक मिल्यन मुसलमान रहते हैं परन्तु निर्मित मस्जिदें बहुत ही कम दिखाई देती हैं और

प्रमीशन के बिना मस्जिद के तौर पर प्रयोग की जाने वाली बिल्डिगों की संख्या सैकड़ों में है इसलिए कि इटली में मस्जिद के लिए प्रमीशन लेना बहुत कठिन है।

वहीं दूसरी ओर पिछले महीनों में रूस की राजधानी मास्को में सबसे बड़ी मस्जिद का उद्घाटन समारोह बड़ी शान के साथ मनाया गया, यह वह मस्जिद है जिसको तातारिस्तान के एक व्यापारी ने 1904 ई0 में अपने धन से बनाया था, जिसे सन् 2006 ई0 में इस्लाह व मरम्मत और उसे बढ़ाने के पश्चात एक नया रूप दिया गया था और अब पुनः इस मस्जिद को मॉडर्न तौर पर बनवा कर बाक़ाइदा रूस के शासन ने इसका उद्घाटन समारोह मनाया जिसमें रूस के अध्यक्ष वलादी मीर पोतीन के अतिरिक्त सऊदी अरब, अरदुन, कतर, ईरान, करगेजिस्तान, आजर बाइजान, तुर्कयानिस्तान, ताजिस्तान और दूसरे देशों के शासकों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

याद रहे कि मस्जिद के बढ़ाने तथा उसमें कुछ बदलाव लाने के पश्चात उस मस्जिद का छेत्रफल 18,900 वर्ग मीटर हो चुका है जिसमें एक ही समय में दस हज़ार मुसलमान नमाज़ अदा कर सकते हैं। बहुत ही सुन्दर तथा आकर्शक इस्लामिक भवन निर्माण पर इस मस्जिद का केन्द्रीय मीनार 46 मीटर ऊँचा है जो शहर के दूर दूर के स्थानों से इस्लाम और मुसलमानों की पहचान को स्पष्ट कर रहा है। इस मस्जिद की इमारत में कांफ्रेंस हाल, लायब्रेरी, मुस्लिम छात्रों के लिए हास्टल और आफिसेज विद्धमान हैं। इस्लाम के परिचय तथा उसके अध्ययन से सम्बन्धित यह सूचना कितनी खुशी की है कि रूस ही के एक दूसरे नगर या तरमबरा में भी वह लोग जो सोशल मीडिया को अधिकतर प्रयोग करते हैं, कुछ महीनों से यह दिखाया जा रहा है कि फेसबुक, ट्योटर और दूसरे सोशल मीडिया पर अधिकांश लोग इस्लाम के अपने रुचि रखने वाले पाये गये, और बराबर ऐसे लोगों में वृद्धि हो रही है जो न केवल इस्लाम से रुचि रखते हैं अपितु इस्लाम स्वीकार करना चाहते हैं और वह सब कुछ रुसी सोशल मीडिया पर "इस्लाम को जानो" नाम से हो रहा है।

इस परिस्थिति में वहां के शासन के जिम्मेदारों ने अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए बताया कि हम उन लोगों तक पहुंचना चाहते हैं जो इस वेबसाइट "इस्लाम को जानो" के ज़िम्मेदार हैं, क्योंकि इस वेबसाइट द्वारा इस्लाम के परिचय के तौर पर अधिकतर इस्लामिक जानकारी, सोशल मीडिया को प्रयोग करने वालों के लिए उपलब्ध की जा रही है।

इन्शाअल्लाह फिर बुराई से भलाई प्रकट होगी और जो इस्लाम का अध्ययन कर रहे हैं, वह उसे स्वीकार करेगी। और एक बार फिर काबे को सनम खानों (मूर्ति घर) से पासबां (रखवाले) मिलेंगे।

और वह पूरे संसार में इस्लाम के सन्देश वाहक और इस्लामी शिक्षाओं को पहुंचाने वाले दूत सिद्ध होंगे।

❖❖❖

एक मुस्लिम युवक की बहादुरी

—इदारा

अब तो देहातों में भी घर घर हैंन्ड पाइप लग गये हैं, पहले लोग हैण्ड पाइप से अवगत ही न थे कुओं से पानी लिया जाता, कुछ जगहों पर तो कितने घरों से कुआं दूर होता और पानी भरना एक मसअला (समस्या) था। आमतौर से कुएं के गिर्द जगत होती कुएं के घेरे पर बीच में एक मोटी लकड़ी इस प्रकार रखी जाती कि कुएं के गोल मुंह को दो भागों में बांट दे कुएं से पानी लेने वाले डोल या घड़ा, या बाल्टी रस्सी में बाँध कर कुएं में डालते फिर एक पैर लकड़ी के कांस पर रखते दूसरा जगत पर और डोल खींच कर पानी निकालते वह लकड़ी जो बीच में रखी जाती उस को लोग काठ कहते चाहे वह पत्थर का हो।

कुछ कुओं पर गड़ारी लगी होती उस से पानी खींचने में आसानी होती।

मेरे गांव में मेर घर से 200 कदम पर कुआं था, कुएं के चारों ओर यादव लोगों के घर हैं इस कुएं पर गड़ारी न थी काठ रखा हुआ था। शायद सन् 1950 की बात है, कार्तिक का महीना था, सुब्ह के 10 बजे होंगे सब मर्द खेतों में व्यस्त थे घरों में केवल कुछ औरतें ही थीं।

राम लाल यादव का घर कुएं से करीब था उनके घर के मर्द और औरतें सब खेत में थे, केवल उनकी 16 वर्षीय लड़की थी जिसको चबैना शरबत और पानी खेत पर पहुंचाना था, वह डोल रस्सी लेकर कुएं पर पानी लेने आई डोल खींच रही थी कि पता नहीं क्या हुआ वह कुएं में जा गिरी, एक छोटी लड़की कुएं के पास खड़ी थी उसने इसे गिरते देख लिया और चिल्लाई अरे चन्द्रिका (काल्पनिक नाम) दीदी कुएं में गिर गई, कई घरों से यादव औरतें निकल आईं और कुंऐ में झाकनेलगीं चन्द्रिका ऊपर नीचे आते जाते दिखी सब औरतें चिल्लाने लगी, बचाओं बचाओ, कोई चिल्लाती राम लाल को बुलाओ।

इतने में उधर से मेरा चचा जाद भाई इफ्तिखार गुजरा, पूछा क्या हुआ, एक औरत ने कहा भय्या चन्द्रिका कुएं में गिर गई और बूड़ (डूब) रही है, इफ्तिखार तैराक भी थे और कुएं में उतरने के माहिर थे उन्होंने कहा रस्सी लाओ मैं काठ में बांध कर कुएं में उतर कर चन्द्रिका को बचा लूंगा रस्सी आने में देर हुई तो इफ्तिखार ने अपनी जान जोखिम में डाल कर कुएं में छलांग लगा दी, कुएं में उस समय इतना पानी था कि लम्बे कद वाले इफ्तिखार की दाढ़ी तक था मगर चन्द्रिका का कद तो छोटा था वह डूब रही थी, अगर जरा देर होती तो वह डूब जाती, इफ्तिखार ने उसको पकड़ कर उठा लिया और

अपने कन्धों पर ले लिया, वह खासा पानी पी चुकी थी और आपे में न थी, इतने में कई रस्सियां आ गई दो तीन रस्सियां लटकाई गई, इफ्तिखार ने कहा एक खैंची गिराओ तुरंत खैची लाकर उतारी गई, इफ्तिखार ने खैंची के तीन ओर रस्सी बांधी और चन्द्रिका को खैंची में डाल कर कहा बराबर से तीनों रस्सियां खींचो, देहात की औरतें शक्तिशाली होती हैं उन्होंने चन्द्रिका को खींच कर बाहर निकाला, इफ्तिखार भी एक रस्सी द्वारा कुएं से बाहर आये, अब राम लाल भी खबर पाकर खेत से आ चुके थे। देहाती उपायों से चन्द्रिका का पानी जो उसने पी लिया था निकाला, उसे आराम कराया एक घण्टे के पश्चात चन्द्रिका ठीक हो गई।

राम लाल ने इफ्तिखार का आभार कभी न भुलाया, इफ्तिखार की बहादुरी का बड़ा चर्चा रहा। इस प्रकार का था हमारा हिन्दू मुस्लिम दीहात का समाज जो आज दुर्लभ है।

❖❖❖

इस्लाम की नज़र में .....

"पढ़ अपने रब के नाम से जो सबका बनाने वाला है" (इक़रा बिस्मि रब्बिकल लज़ी ख़लक़) के पालन में ही सम्भव हो सका था। जब सफ़र के आरम्भ की दिशा ठीक होती है तो मंज़िल पा लेना भी सम्भव होता है। इस्लाम ने कुरआन और ईमान के द्वारा एकता का ऐसा मार्ग प्रस्तुत किया जिसने सभी विभिन्नताओं को एक डोर में पिरो दिया, यह एक डोर कुछ और नहीं, केवल एक सृष्टा (अल्लाह) की पहचान है। इस तरह ज्ञान उद्देश्यपूर्ण, लाभकारी और खुदा तक पहुंचने का ज़रिया बन गया। अब ज्ञान इन्सानियत की सेवा और समाज के निर्माण में लग गया। यह दृष्टिकोण इंसान के चिन्तन–मनन और क्रम शीलता के लिए वर्दान स्वरूप बन गया। इसने इंसान की क़िस्मत बदल दी, और उसके सोचने की दिशा बदल दी जिसके फलस्वरूप इल्म (ज्ञान) की दुनिया में इन्क़िलाब आ गया।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के .....

हो तो ऐसी सूरत में वालिदैन से इजाज़त लेना और उनकी खिदमत का नज्म करना ज़रूरी है बे इजाज़त हज पर चला जायेगा तो हज मकरूह होगा लेकिन अगर वालिदैन खिदमत के मुहताज नहीं हैं तो इजाज़त ज़रूरी नहीं है लेकिन इजाज़त लेना चाहिए ताकि हज अच्छा हो।

(फतावा हिन्दियाः 1/113)

प्रश्नः अगर किसी के पास हज करने भर की रकम है, उसके वालिदैन मौजूद हैं मगर उसके पास इतनी रक़म नहीं है कि वालिदैन को साथ में हज पर ले जा सके ऐसी सूरत में वह क्या करे?

उत्तरः जिस पर हज फर्ज़ हो चुका है वह अपना हज अदा करे अपने हज़ से पहले वालिदैन को हज कराना जरूरी नहीं है अलबत्ता अगर अल्लाह तौफीक़ दे तो वालिदैन को हज कराना बड़ी नेकी है।

(फतावा हिन्दियाः 1/217)

❖❖❖

अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद को
हज़रत शफीक बल्ख़ी की नसीहतें

—मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

अब्बासी ख़ालीफ़ा हारून रशीद अरब साम्राज्य के एक बड़े सम्राट थे। ऐसे सम्राट विश्व में बहुत कम ही जन्मे हैं। उनके शासनकाल में अरब साम्राज्य अर्थात इस्लामी साम्राज्य ने बड़ी तरक़्की की। उस समय विश्व में दो सबसे बड़े शैक्षिक मुख्यालय थे, एक कुरतबा जो स्पेन में स्थित था, दूसरा बगदाद। याद रहे! कुरतबा शैक्षिक मुख्यालय तभी तक रहा जब तक स्पेन की बागडोर मुसलमानों के हाथों में रही।

उन्हीं हारून रशीद का वाकिया है कि उनके दौर में एक बहुत बड़े बुजुर्ग थे, नाम था शफीक बल्खी। एक बार संयोग से उनकी मुलाकात हज़रत शफीक बल्खी से हो गयी। सहसा हारून रशीद के मुँह से निकल गया कि क्या आप ही इस दौर के महापुरुष हैं? उन्होंने कहा नहीं, भाई! मैं तो शफीक हूं। हारून भी खामोश हो गये और सोचने लगे कि हाँ मैंने गलत सवाल किया, क्या कोई अपने मुँह से स्वयं को महान और श्रेष्ठ कह सकता है? जो कोई कहे तो समझिए कि ज़रूर कहीं न कहीं खोट है।

कुशल क्षेम पूछने के बाद हारून रशीद ने कहा, हज़रत! कुछ नसीहत कीजिए कि मैं उस पर चल कर कामयाबी हासिल करूँ। हज़रत शफीक रह0 ने कहा, एक बात का ख्याल रख! पूछा, किस बात का? कहा, तुझे हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की जगह बिठाया गया है, तुझ में मामले की समझ, चिन्तन–मनन की योग्यता और सच्चाई होनी चाहिए, जैसी कि उनमें थी। तुझे हज़रत उमर रज़ि0 के स्थान पर बिठाया गया है, इसलिए तुझ में न्याय का तत्व कूट–कूट कर भरा होना चाहिए। सच और झूठ में अन्तर रखने की क्षमता होनी चाहिए। लोगों को अपने वश में रखने की योग्यता होनी चाहिए, जो उनमें थीं। तुझे हज़रत उस्मान रज़ि0 के पद पर बिठाया गया है, इसलिए तुझ में शर्म, दया, गुस्से पर काबू रखने वाले गुण होने चाहिए, जो उनमें थे। ऐ अल्लाह के बन्दे! याद रख, तुझे हज़रत अली रज़ि0 के ओहदे पर बिठाया गया है, तुझ में निःस्वार्थता, ज्ञान, संयमता और वीरता होनी चाहिए, जो उनमें थी।

अरब साम्राज्य का महान शासक उनकी एक–एक बात बड़े ध्यान से सुनता रहा। हारून ने कहा, हज़रत! और नसीहत कीजिए। हज़रत शफीक ने कहा, एक जगह है, तुझे उसका द्वारपाल (गेट कीपर) बनाया गया है, हारून ने पूछा, कहां का? कहा उसका नाम नरक (दोजख) है। तुझे उसका द्वारपाल बना कर तीन चीजें दी गई। हारून ने पूछा, वह कौन सी? कहा एक खजाना है, एक चाबुक है और एक तलवार। तेरे लिए ज़रूरी है कि इन तीनों से काम ले। जो वेतन लेते हों या मोहताज हों उन्हें

राजकोष से दे। अमानतदारी और ईमानदारी से एक–एक पाई खर्च कर। कोई यदि वैध–अवैध में अन्तर न करे, हराम–हलाल में फर्क न करे, कानून पर न चले तो उसे चाबुक से सबक सिखा उसमें अदब, तमीज, संस्कार और दूसरों के लिए भलाई का जज़्बा पैदा कर। शासक का भय समाप्त हो जाए तो शान्ति कोरी कल्पना का रूप धारण कर लेती है। यदि कोई किसी बेगुनाह की हत्या करे अथवा तेरे देश की सीमाओं का अतिक्रमण करे तो फिर तलवार उठा। यदि तू ऐसा न करेगा तो याद रख! जहन्नमियों (नर्क वासियों) का सरदार बनेगा और तेरे दरबारी, तेरे ओहदेदार और तेरी हाँ में हाँ मिलाने वाले तेरे साथ जहन्नम रसीद होंगे।

हारून रशीद अब्बासी सर झुकाये खामोशी से सुनते रहे। बुजुर्ग नसीहत कर चुप हुए तो फिर हारून ने कहा, हज़रत! और नसीहत करें। हज़रत शफीक रह0 ने कहा जलस्रोत से नहरें निकल कर चहुँओर फैल जाती हैं, समझ ले कि तू उद्मग है, तेरे अधिकारी, कर्मचारी, तेरे पदाधिकारी नहरें हैं। याद रख! यदि उद्गम् साफ होगा तो नहरें भी साफ होंगी।

हारून रशीद ने नसीहतों को सुन कर डबडबाई आंखों से दुआ मांगी कि ऐ मेरे रब! मुझे इन उपदेशों पर चलने का सौभाग्य प्रदान कर, मै बहुत कमज़ोर और बहुत बड़ा गुनहगार आदमी हूँ।

आज तो हालात बदल गए हैं। लोगों के पास अब तो तनिक भी पैसा या पॉवर आ जाता है तो बड़े–बुजुर्ग की नसीहतें सुनने से अपने को बरी समझते हैं और दरबारी अपने मंत्रियों की अथवा कर्मचारी अपने अधिकारियों की झूठी तारीफें कर–कर उन्हें निकम्मा बना देते हैं। अक्लमन्द आदमी की निशानी यही है कि वह अपनी मण्डली में नसीहत करने वालों और आलोचकों को ज़रूर जगह देता है अन्यथा चापलूसों के चंगुल में फंस कर वह अपने को बर्बाद कर लेता है।

❖❖❖

इसी में भलाई है

–अब्दुल रशीद सिद्दीकी

पढ़ो तौहीद का कल्मा
इसी में बस भलाई है
पढ़ो कल्मा मुहम्मद का
इसी में तो भलाई है
नहीं माबूद है कोई
सिवा अल्लाह के सुन लो
मुहम्मद का तरीका थाम लो
इसी में ही भलाई है
फराएज़ को करो पूरा
मुसलमानों जरा सुन लो
नमाज़ों को करो कायम
इसी में ही भलाई है
हुआ है फर्ज रोजा मोमिनो
रमज़ान का सुन लो
रखो रोज़ा मेरे भाई
इसी में तो भलाई है
अगरचे माल तुम को है दिया
अल्लाह ने सुन लो
गरीबों की मदद कर दो
इसी में तो भलाई है
बहुत सा माल रख करके
यहाँ गुमराह मत होना
फरीजा हज़ करो पूरा
इसी में तो भलाई है
फराएज़ पाँच हैं इस्लाम में
ऐ मोमिनो सुन लो
करे सिद्दीकी भी पूरा
इसी में ही भलाई है
सल्लल्लाहु अलन्नबी व सल्लम

❖❖❖

ईमान की अलामत

—हाशमा अंसारी

हदीस शरीफ में आया है कि "जिसने अल्लाह के वास्ते किसी से महब्बत की और अल्लाह ही के वास्ते किसी को कुछ दिया और अल्लाह ही के वास्ते किसी को कुछ न दिया तो ऐसे शख्स ने अपने ईमान को कामिल कर लिया।"

अल्लाह के वास्ते महब्बत करने का मतलब यह है कि एक शख्स बहुत दीनदार है लेकिन तुम्हारे घर वालों से किसी वजह से नाइत्तिफाक़ी है सलाम कलाम बन्द है तुम्हारे बाप चचा वगैरह इससे बात नहीं करते लेकिन वह शख्स दीनदार है, ऐसे शख्स से महब्बत करना अच्छा बरताव करना और हुस्न अख़्लाक़ से पेश आना यह ईमान की अलामत है और यही मतलब है कि दीनदारों से महब्बत करना ही अल्लाह के वास्ते महब्बत करना है, यानी कोई शख्स बिरादरी और खानदान का हो या ना हो लेकिन चूंकि दीनदार है अल्लाह का नेक बन्दा है, इसलिए तुमको उससे महब्बत होनी चाहिए।

इसी तरह एक शख़्स के आमाल व अख़लाक़ बड़े खराब हों वह शख्स फासिक, जालिम बदकिरदार शराबी जुआरी हो लेकिन तुम्हारे घर वालों से उसकी दोस्ती हो तो एसे शख्स से उसकी बदअमली बद अख़लाक़ी की वज़ह से नफ़रत रखना यह भी ईमान की अलामत है उससे नफरत होना यह अल्लाह पर ईमान और उससे महब्बत की अलामत है। इसी तरह किसी शख्स को माल देना खिलाना पिलाना सब अल्लाह ही के वास्ते हो यह भी ईमान की अलामत है।

एक शख्स है जिसको तुम जानते पहचानते भी नहीं, तुम्हारे खानदान और बिरादरी का भी नहीं लेकिन हाजतमन्द और परेशान हाल है तो ऐसे शख्स की मदद करना और उसको माल देना यह अल्लाह की महब्बत की वजह से होगा जो ईमान की अलामत है। इस के बरखिलाफ अगर कोई शख्स भीख मांगता है, करीबी रिश्तेदार है, या मिलने वाला और पड़ोसी है, या लड़का ही क्यों न हो लेकिन मालूम हो कि बड़ा फासिक (गुनहगार) सिनेमाबाज है, पैसा हाथ में आया फौरन गुनाह के काम में खर्च किया तो ऐसे शख्स को न देना और उससे अपना हाथ रोक लेना ही ईमान की अलामत है।

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये —इदारा

सामने लिखी हिन्दी की मदद से उर्दू जुम्ले पढये।

यौमे जम्हूरिया	یومِ جمہوریہ
दिन है यह जम्हूर का	دن ہے یہ جمہور کا
भारत के दस्तूर का	بھارت کے دستور کا
हाकिम और महकूम का	حاکم اور محکوم کا
नौकर और मज़दूर का	نوکر اور مزدور کا
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद	بھارت پیارا زنداباد
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद	ہند ہمارا زنداباد
बना हमारा है दस्तूर	بنا ہمارا ہے دستور
दुन्या में है यह मशहूर	دنیا میں ہے یہ مشہور
कवी हो कोई या माजूर	قوی ہو کوئی یا معذور
हक़ सब का इसमें मस्तूर	حق سب کا اس میں مسطور
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद	بھارت پیارا زنداباد
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद	ہند ہمارا زنداباد
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई	ہندو مسلم سکھ عیسائی
पन्डित, ठाकुर, बनिया, नाई	پنڈت، ٹھاکر، بنیا، نائی
बुनकर, धुन्या, और कसाई	بُنکر، دُھنیا، اور قصائی
देश की जो करते हैं सफाई	دیش کی جو کرتے ہیں صفائی
नहीं है कोई याँ महरूम	نہیں ہے کوئی یاں محروم
हक़ सबका है याँ मरकूम	حق سب کا ہے یاں مرقوم
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद	بھارت پیارا زنداباد
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद	ہند ہمارا زنداباد